असली

उल्लूक तंत्र

जय बाबा गोरख नाथ

असली
प्राचीन-उल्लू तंत्र

पं०—नरेन्द्र नाथ तांत्रिक मणि

प्रकाशक :

पंकज प्रकाशन

७१५, सतघड़ा-मथुरा (उ. प्र.)

मूल्य ५०/-

प्राचीन

उल्लू-तंत्र

"दैव्युवाच"

श्लोक-भगवान देव देवेश सर्व लोक हिते प्रभो ।
उलूकस्याप्रि देवेश कल्प कथयमे प्रभो ।।1।।

श्री पार्वती जी शंकरजी से कहती हैं कि हे **भगवान** ! देव देवेश, कृपा करके मुझसे उलूक कल्प का वर्णन **कीजिये।**

ईश्वर उवाच-साधु-साधु महाभागे जगदानुग्रह करके ।
माघ शुक्ल चतुर्दश्या गृहीत्वेलूक बन्धयेत ।।2।।

श्री शंकर बोले-हे महाभागे हे संसार पर कृपा करने वाली देवी तुमने यह प्रश्न लोकहित की दृष्टि से बहुत अच्छा किया । अब मैं उलूक कल्प कहता हूं उसको ध्यान पूर्वक श्रवण करो । माघ शुक्ल चतुर्दशी के दिन उलूक को पकड़ कर बन्धन में करले तत्पश्चात् ।

मन्त्र-

ओं नमः भगवते रुद्राय आगच्छ 2 प्रविशय प्रविशय धुन-धुन कार्कशय आकर्षयमन्डलं प्रविशय प्रविशय स्वाहः ।

इस मन्त्र को 108 बार जपकर सिद्ध करले ।

श्लोक-इति मन्त्रेण काकारि संग्रमह साधकोत्तनः ।

नित्य पंचोपचारेण पूज्य भक्ति समन्वितः ।

एक विंशति पक्षेयु मर्द्धीन चैव विशेषः ॥3॥

उपरोक्त मन्त्र को नित्य जप सहित उल्लू को पकड़ कर श्रद्धा से शोडषोपचार पूजन करे और 21 बार इसी मन्त्र को पढ़कर उसके मस्तक तथा पंखों का स्पर्श करें । पश्चात्

मन्त्रम्-ओं कुरू महेश्वरी अन्वद्धिनी प्रिंयेश्वीर नमः । इति मंत्रमेकविंशति प्रयक्षत्रः पठेत् ।

ताडतेदक्षतानान्तु पाज्येन्क्रित्य नित्यः ॥4॥

तस्य खक्ष्यामि त्रुणुदेवि विलक्षण ।

नरास्थि चूर्णमादाय प्रेत मस्तक तन्तुभिः ॥5॥

मृत पुरुषस्य ताम्बूल क्षिभिश्चर्णान्तु कारयेत् ॥6॥

तण्डुलं पया मासानिकिश्रत चूर्णान्तु कारयेत् ॥7॥

मन्त्र-मावर्य चान्तेन इति भक्तनतु दीपयेत् ।

ओं कुरु कुरु महेश्वरी अत्र वर्दिके प्रियेश्वरी नमः ।

इस मन्त्र को 21 बार प्रत्यक्ष रूप से जप करे फिर नित्य प्रति अक्षतों से ताड़न कर मन्त्र का जप उल्लू के सामने ही बैठकर करें । हे देवि अब उल्लू का भक्ष्य पदार्थ श्रवण करो । नरास्थि का चूर्ण यानि मरे मनुष्य की हड्डी का चूर्ण तथा मरे पुरुष का ताम्बूल इनका चूर्ण बनाकर तान्डुल पय या मांस में मिलाकर उसे खिलावे और अन्त में मन्त्र का जाप करे ।

'शरादे तु जल दत्वां अक्षयेकदेक पक्षकम्'

मन्त्रम्-ओं उलूकाये नमः । इति मन्त्रेण पजयादौ भक्ष्य

द्रव्यं तु दापयेत । यस्मे सव शमायाति सत्यमेव न संशय: ।।7।।

शराब में जल मिलाकर वाम (पंख) को उखाड़कर 'उलूकायै नम:' इस मन्त्र से उस पंख का पूजन करके उक्त पंख का किंचित भाग भी जिसे खिला दिया जावेगा वह वश में हो जायेगा ।

रात्रौ कृष्ण चतुर्दश्या शुचिर्भूत्वा तु साधक: ।
पुन: पूर्वेण मन्त्रेण काकारि पाहयं बन्धयेत् ।।8।।

साधक कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को पवित्र होकर पूर्वोक्त मंत्र का उच्चारण करता हुआ पुन: उल्लू को पकड़ कर बन्धन में करे ।

विधि

कांस्य भोजन मध्यस्य कृत्योबूकत्तु सन्मुखे ।
पूर्व तष्पूजयेन्मंत्र ततवारीच्च प्रदक्षिण ।।9।।
सगुह्य दक्षिणं पाणौमूलबन्तुर्ध्व कारयेत् ।
तथा स्वभुज काकारि भदस्य जायते यदि ।।10।।
तस्य सिद्धिर्थ बेदूल के पुन कांस्ये स्थापवेत ।

पुन: किसी कांस्य पात्र में उल्लू को स्थापित कर पूर्व के समान मन्त्र का जाप करके चार बार प्रदक्षिणा करे तत्पश्चात दक्षिण हाथ से पकड़कर उसको ऊपर उठा ले । इस विधान के करने से उलूक सिद्ध हो जायेगा फिर उक्त पात्र के स्थापन कर उसका विधिवत पूजन करे ।

तृतीय विधानम्

कांस्यस्थालिस्यां पदपेल्लूकोअश्रूपातः गृहेन्नाः ।
रोजनं चव मश्रुचश्र गौधृत तथा अदृश्यस्काच्च ।।
गौमूत्र क्षालानार्द्ध सुखी भवेत ।।11।।

अब तीसरा विधान कहता हूँ । उल्लू को काँसे के पात्र में स्थापित कर पूजन करे तो उल्लू का अश्रुंपात होगा उस अश्रु बूंदों में गोरोचन तथा गौघृत मिलाकर अन्जन बनाकर आंखों में लगावे तो मनुष्य अदृश्य भाव को प्राप्त हो और आँखों को गोमूत्र से धोने पर पूर्ववत स्थिति में हो ।

मन्त्र-ओउम नमो रुद्राय हों हूँ फट नमः ।। 108 बार जपने से सिद्धि होता है ।

एन मन्त्रं समुच्चार्य मारतेल्लुक भाजनैः ।
रक्षयेद्वक्य पात्राणि तत प्रयोगा वदाम्यहम् ।।10।।

उक्त मन्त्र को 108 बार जाप करके पात्र में रखे उलूक को मार डाले और पात्र को उसके रक्त से भर ले फिर इसके पश्चात

मन्त्र-तद्रक्तानामिचाकोंच ललाटे बिंदु काययेत ।
निरपादि सर्व भूताना द्रष्टिं मात्रेण यस्य कृत ।
मधुयुक्त च तद्रक्त नेत्रयोरं जने नरः ।।13।।
सप्त स्वर्गादि वाद्या द्रष्टि गोचर जायते ।।
उल्लुकस्य कपालेन शुष्क चूर्ण तु कारयेत ।।14।।
शत्रु ग्रह क्षये किंचत जायते शून्य मन्दिरम् ।

उलुकस्य शिरो ग्रास्य हरताल मनः शिला ॥15॥

सपेन्य तन्त्र मन्त्र युक्त च कारयेत् ।

इस उल्लू के रक्त को अपनी अनामिका के रक्त में मिश्रित कर मस्तक में यदि तिलक करे तो सम्पूर्ण पृथ्वी पर व्यक्ति जो भी देखे वश में हो उसी रक्त को यदि शहद में मिलाकर आँखों में अंजन करे तो सातों स्वर्गादि लोकों के दश्य दृष्टिगोचर हो । उल्लू के कपाल को सुखाकर चूर्ण करले और फिर इस चूर्ण को शत्रु के घर में डाल दे तो शत्रु का गृह शून्य हो जायेगा । अर्थात् एक सप्ताह में वह सकुटुम्ब नष्ट हो जायेगा अथवा उल्लू का सिर हरताल मैंनशिल इन तीनों को समान भाग पीसकर शत्रु के ऊपर चुटकी मारे तो शत्रु नष्ट हो ।

श्लोक-उलूकस्य शिरो ग्राह्य नर रक्त समन्वित् ।

श्रोतजाने सहित अस्तु अस्तुधु मेन दयावते ॥16॥

अनेनान्वित नेत्रस्तु पश्यते सचराचरम् ।

निधिनानि त्रिचित्रानि सिर भूमि गतानि च ॥17॥

अब अन्य प्रयोग कहता हूँ वह सुनो । उल्लू का सिर नर रक्त श्रोतन्जन, अन्तरधुम इन सबको मिश्रित कर यदि नेत्रों को आँजे तो जमीन में गढ़ी हुई सारी निधियाँ व धन दिखे ।

श्लोक-उलुक जिव्हा धतुरे रसेनाघश्यरीयते ।

विद्वेषी भक्ष्न मात्रेण पुनरुच्चाटन ध्रुव ॥18॥

उल्लू की जिव्हा धतूरे के रस में पीसकर जिस व्यक्ति

को दी जावे वह व्यक्ति प्रथम विद्वेष प्राप्त हो और बाद में उच्चाटन हो ।

उलूक की जीभ और वरांग का चूर्ण मालती पुष्प के चूर्ण में मिश्रित कर गोरोचन को मिलाकर गुटका बनावे और उसे त्रिलोह के यन्त्र में रखकर मुख में रखे तो अद्रश्य हो ।

उलुक की नाभि हृदय कलेजा और फेफड़ा इस चूर्ण को गोरोचन में मिलाकर गुटका बनावें और उसे अभिमन्त्रित कर यदि आँखों में आंजे तो वह व्यक्ति अदृश्य हो ।

और नाना रूपधारी विद्याधारी को भी देखने में समर्थ हो ।

मन्त्र–ओउम् नमो भगवते रुद्रातेत्स्य प्रथम अष्टोत्तरशत जप कुर्यात् ओउम् नमो कालरात्रि तिरसूल हस्त धारणी महिषवासिनी नर कपाल भाल शिरे आगच भगवति अन्तरिक्ष करिणीमम् सिद्धि कुरु स्वाहा–इति मन्त्रम दृष्टि करणश्र अष्टत्तर शत सिद्धिः ।

उक्त मन्त्र 108 बार जाप करने से मनुष्य अदृश्य होता है ।

मंगल के दिन उलूक की जीभ गोघृत में पकाकर तांबे में रखकर यदि कंठ में बांधे तो पाताल के दर्शन करने में समर्थ हो ।

अथवा नेत्रों में आंजे तो अदृश्य हो ।

उक्त जिव्हा को तिलोह में रखकर मंगल के दिन रात में खाट से बांधे तो शत्रु स्तम्भ होवे ।

उलुक के नेत्रों को छाया में सुखाकर चूर्ण कर नेत्रों में आँजे अदृश्य हो इसमें सन्देह नहीं ।

उलुक के नेत्रों को हिरन के रक्त में घिसकर भोजपत्र को जिस व्यक्ति के हाथ में काले डोरे लपेट कर बाँधे तो सब प्रकार से ज्वर का नाश हो ।

उलुक के नेत्र श्रोतजल में मिलाकर पुष्य नक्षत्र के दिन मन्त्र सात बार अभिमन्त्रित कर यदि नेत्रों में आँजे तो हे देवि साधक को अपने पूर्व जन्म की याद आवे ।

देव असुर मनुज गन्धर्व सर्प विद्याधर योनियों की याद आवे ।

उलुक का नेत्र और गुदा केशर कपूर इन सबका सम भाग शहद में पीसकर आंजे तो दिव्य दृष्टि हो वह अंजन सर्वोपरि है ।

ओं नमो भगवते रुद्राय ओं लमेह हलु बिहुल विहुल हर यत्न रक्ष पूजते व कुमार्यो सुलोचने स्वाहा । इति ।

अन्यथा ओं नमो कालरात्रि त्रिशूल हस्त महा महर्षि वाहनी रुद्रकाल तेमाखेर आगच्छ भगवान अत्र नवसरो सिद्धि कर्माणि में शिव कुरु कुरु स्वाहा । इति जाति स्मरणादि उक्त योगादि मन्त्र सिद्धिः ।

विधि

उलुक के दोनों कान एरन्ड में मिलाकर दूध में पीसकर चूर्ण बनावे और जिस मनुष्य के ऊपर सिर पर डाले या खानपान में दे तो वह वश में हो यह उत्तम उभय प्रयोग है

शेष सभी स्फुट है ।

मंगल के दिन उलुक की चोंच को और पैर के नाखूनों को घिसकर मनुष्य निज शरीर पर लेप करे तो शतयोजन चलने की सामर्थ्य हो परन्तु एक सप्ताह तक उक्त मन्त्र का जाप कर लेना चाहिये ।

उलुक की चोंच जेठी मधु हरताल एककर आँच में साधे इनको चूर्ण बनाकर आंखों में आंजे तो चातुर्दिक ज्वर दूर हो ।

उलुक को सात बार अभिमन्त्रित कर जिसके द्वार पर गाड़ दे वह घर सूना हो जावे कालरात्री को पूर्व मन्त्र से अभिमंत्रित करे ।

उलुक के दक्षिण पंख को अभिमन्त्रित करके दक्षिण हस्त में बांधे तो प्रेत दोष दूर हो । पूर्वोक्त मन्त्र का ही जाप उक्त रीति से करे ।

उलुक का पंख व पूंछ दायीं भुजा में बांधे तो दुष्ट ग्रह शान्त हो ।

उलुक के तीन पंखों को बांये हाथ पर लेकर सात बार अभिमन्त्रित करके जिस घर में निक्षेप करे वह गृह शून्य हो अर्थात सब मृक के समान हो जाय ।

उलुक की पूंछ को पंचवर्ण के ताबीज में रखकर रोगी के गले में बाँधे अथवा भुजा में बाँधे तो ज्वर जल्दी दूर हो ।

मंगल के दिन उलुक के पंख को जलाकर भस्म कर उसमें सम भाग कुम्कुम और कस्तूरी इनको मिश्रित कर मन्त्र

हुआ धन दिखाई दे यह शिवोक्त सिद्धियोग है ।

ओं दह दह हन स्वाहा, अष्टोत्तर शत जपात सिद्धिः ।

उल्लु की अस्थि की कील को सात बार अभिमन्त्रित कर जिसके गृह में गाढ़ दे उसका उच्चाटन हो । पर उक्त मन्त्र को प्रथम 108 बार जप करके सिद्ध कर ले ।

॥ इति शिव पार्वती संवादे उलूक शास्त्र समाप्तम् ॥

तृतीय खण्ड

गुटिका चलते 2 न थके

काले तीतर की गर्दन सुखा रक्खे और चौथे दिन उसकी चोंच खोल उसमें पारा डाल दे और गाय के दूध के भीगे चावल उसे खिलाये जायें फिर जब तीतर वीट करे तो बीट पिंजड़े से निकालो । उसमें पारे की गोली मिलेगी यही गोली मुंह में रखकर जितना भी चलोगे थकोगे नहीं ।

वस्तु बिके और शत्रु खरीदे

जिस वृक्ष पर गुगल हो उसे शनिवार को निमन्त्रण दे आवे व इतवार को प्रातः उसकी डाली लगाकर गूगल की धूनी दे और पैर के नीचे दबाकर बैठ जाय और 10 मन्त्र जपकर डाली सिद्ध करले और उस डाली के पत्तों को सिर पर रखकर व्यापार करे तो दुश्मन भी इच्छानुसार कीमत देकर माल खरीदे ।

मन्त्र–ओउम् नमो चंड अलंसुर स्वाहा ।

गढ़ा धन दिखे

लाल पूंछ की वामन के खून और मैंनसिल को पीस कर अंजन लगावे तो गढ़ा धन दिखाई दे ।

रिद्धि सिद्धि

भादों कृष्ण पक्ष में जब भरणी नक्षत्र हो मिट्टी के घर में चौकादिक करके चार कलश भरकर रक्खे और गूगल की धूनी देकर विधि पूर्वक उनकी पूजा करे फिर दूसरे दिन देखे तो कलश खाली हो गये हों उनमें फिर अक्षय भर दे और एकान्त में रख नित्य उसकी पूजा विधि से किया करे और भरे हुए कलश के जल घर में छिड़क दे तो अन्नपूर्णा देवी उससे प्रसन्न हो उसकी कभी भूखा नहीं रहने देती है । उसे ऋद्धि सिद्धि प्राप्त हो जाती है ।

इन मन्त्रों की जब कोई मनुष्य सिद्धि करना चाहे तो उसको चाहिये ब्रह्मचर्य होकर शुद्धता के साथ एकान्त स्थान में जहां कोई न आ सके अपने चारों तरफ धूप, दीपक, फूल अतर, मिठाई रखले और इस मन्त्र को अपने ऊपर फूंक लेना चाहिये और आसन के चारों ओर 3 कुन्डली खींचले क्रिया शुरु होने पर न फिर किसी से बोले और न लकीर के बाहर निकले मन्त्र का जप बन्द हो जाय तो जो भी बोले उसका जबाव दे ।

मन्त्र

हाथ बसे हनुमन्त भैरों बसे लिलार जो हनुमन्त का टीका करे मोहे जग संसार । जो आवे तार-तार करता सो वाच

पाँय लगनता हनुमन्त वीर पूजा रहे महम्दी वीर छाती तोड़े जुगनियावीर सिर मोड़े उगनियां वीर मर समस्त नरसिंह वीर प्रकट गाज भैरों वीर आन फिरती रहे जो हमारे ऊपर घात डाले उलट हनुमन्त वीर उसी को मारे डाले बांधू थल बाँधू कुटुम्ब और काया चेतरहे प्रानी हनुमन्त वीर आया ताई तरफ सुघाई तुपै लोहा कच पड़े घाई लाल चक्र चक्राँ आसमान छाया हाँक ललकार हनुमन्त वीर अकिपानी हो जासे राजा महाराजाधिराज साहब सत्यके पूत धर्म के नाती तुम्हारा ही आसरा है ।

तरकीब-आठौ प्रहर व्याध से बचने का मन्त्र ऊपर लिखा गया है । मनुष्य प्रातःकाल स्नान करके नित्य पढ़े और कनिष्ठ उंगली पर फूंक कर बाई हथेली पर 3 कुण्डल खींचकर तिलक लगावे तो आठ पहर हर वला से बचेगा ।

मन्त्र भैरों की चौकी

काल भैरों काली रात काली चले आधी रात कालारे तू मेरावीर पर नारी से राखे सीर छाती पाँव धरती लाओ जल्द लाओ न लावे तो माता का पीया दुध हराम होवे ।

डाकिन आदि के सिद्ध करने का मन्त्र

ओवीर बजरंग धारी डंकनी 2 डोक मार गंगा जमुना तुम्हारा वान नहिं बोले बक़रे तो राजा रामचन्द्र की आन तरकीब हर महीने पहले शनीचर को 11 बार धूप दीप कर हनुमान जी की प्रतिमा के आगे जप ले तब अमल में आवे।

और जिन पर आसेव करना चाहे तो फूल की सुगन्ध पर 21 बार जप कर फूंक दे और आसेव के बीमार को सुंघावे तो वह बात करेगा सब भेद बतावेगा ।

सर्पों के सिद्ध करने का मन्त्र

ओं पारब्रह्म परमात्मे नमः जगत्पति स्थितः प्रलयकराय ब्रह्महर हराय त्रिगुणात्मने सर्व कौतुकानि दर्शय दत्तात्र्याय नमः तंत्राय सिद्धि कुरू स्वाहा ।।2।।

विधि-घी का दीपक जला के धूप देवे चन्दन पुष्प नैवेद्य मुहूर्त से दो दिन सिद्धि हो फिर जो तन्त्र करे इसी मन्त्र से करे ।

मन्त्र देह रक्षा

ओं पारब्रह्म परमात्मनेनमः मम शरीर पाहि 2 कुरु स्वाहा 108 बार वह मन्त्र जपे तो सिद्धि हो फिर हर एक सिद्धि के पहले अपनी देह रक्षा यही मन्त्र पढ़कर करें ।

मन्त्र इन्द्रजाल

ओउम् नमो नारायण विश्वशराय इन्द्रजाल कौतुकाय दरशय 2 कुरू 2 स्वाहा ।

विधि-हर एक इन्द्रजाल की विद्या करने से पहले सिद्धि करले ।

भूख प्यास होने का मन्त्र

रविार के दिन ओंगा से चावल की खीर जो मनुष्य पन्द्रह दिन तक पकाकर खावे तो भूख प्यास ज्यादा हो ।

भूख न लगे

गिरगिट की आंत और करेजा का बीज एकत्रित करके पीस कर उसकी गोली बनाले फिर उस गोली को गिलोय में रखकर मुख में रखने से क्षुधापिपासा पीड़ा नहीं देती ।

दूसरी विधि

बकरी के दूध में कमल का बीज चावल तथा घी मिलाकर खीर बनाये । इस खीर को चार दिन तक भोजन से क्षुधा पीड़ित नहीं करती ।

अधिक भोजन करे

दुपहरिया के पेड़ पुष्प तथा इसके पत्तों को पीसकर घी के सहित जो कोई इसको खावे वह भीमसेन के समान भोजन करे । मन्त्र से अभिमन्त्रित रविवार को प्रातःकाल में उसका पत्ता ले आना चाहिये । फिर भोजन करने के समय उस पत्ते को अपने चरण के नीचे रखकर भोजन करे तो बहुत सा भोजन किया जा सकता है ।

पक्षी पकड़ने का उपाय

जल में हींग पीसकर उसमें गेहूं रात भर भीगने दो सुबह उनकी छाया में सुखालो । जो पक्षी उन गेहूं को खावेगा वह फौरन नींद के वश में होकर सो जावेगा । उस समय उसे पकड़ लेना चाहिये । या शहद में गेहूं के दाने मिलाकर जिस पक्षी को खिलाया जाय वह फौरन बेहोश होकर गिर पड़ेगा उसे पकड़ लो । गरम पानी छिड़कने से उसकी बेहोशी दूर हो जायेगी ।

अपनी आँखें खोल लेगा तो आपको पुनः दूसरा कौवा पकड़ना पड़ेगा। दूसरे दिन सुबह आप उसकी आंखों की पट्टी खोल दें और आँखों में दो बूंद गुलाब जल टपका दें और उसे दिन में कुछ खाने-पीने को न दें। सूर्यास्त के समय आधा तोला नारियल के तेल में इतना ही गाय के दूध की मलाई मिलाकर खाने को दें और स्वयं व अन्य सभी लोग वहां से हट जायें जब वह खा चुके तो कल की ही भांति पुनः लाल कपड़े से उसकी आँखों पर पट्टी बांध दें। इसी क्रम से पांच दिन तक नित्य यही करते रहें। उसके बाद से फिर अगले 5 दिनों तक शाम को दही व तेल के स्थान पर 1 रत्ती तम्बाकू को किसी प्रकार रोटी आदि में खिलाता रहे और रात में उसी प्रकार से पट्टी बांधते रहें जिससे वह खोल न पावे और सुबह उसकी आंखों में गुलाब जल टपकाते रहें। ग्यारहवें दिन उस कौवे को मारकर उसकी पूरी आंखें बड़ी सावधानी से निकाल लें और किसी सीप में रख लें। फिर जस्ता का फुल्ला आधा माशा सुहागा आधी रत्ती, सुरमा सफेद एक तोला, भीमसेनी कपूर आधा माशा और नीम की पत्तियों का रस 5 तोला इन सब चीजों को खरल में डालकर बहुत बारीक पीस लें और सुरक्षित शीशी में रख लें। फिर किसी सोमवार की रात को दो बजे श्मशान में जाकर जहाँ पर मुरदा जलाया जाने वाला हो वहाँ एक फुट जमीन के नीचे उस शीशी को दबा दें और उस स्थान पर जब तक कम से कम 14 शवन जल

जावें तब तक गढ़ा रहने दें । बाद को इस शीशी को निकालकर इसका मुंह भली-भांति बन्द करके किसी ऐसे कुंए में काले धागे से बांधकर लटकाये जिसका पानी निकाला जाता हो । उस काले धागे को एक छोर से एक कील से बांध दे और किसी को यह बात कदापि न बतावें । एक मास के बाद उसे कुंये से निकाल लें । बस आपका सुरमा जो भी आंख में लगायेगा वह स्वयं किसी का न दिखेगा पर वह सबको देखेगा ।

17-दिन में तारे दीखना

विधि-यदि कौवे की आंख का डेला सुखाकर उसमें कपूर, कलमी नौसादर और शहद मिलाकर अंजन बनावें और इसे लगाकर वह व्यक्ति कुछ घन्टों के लिये सो जावे बस फिर वह जब सोकर उठेगा तो उसकी दृष्टि बहुत तेज हो चुकी होगी । वह मीलों दूर की चीजें देख सकेगा । दिन में तारे देखें । रात में इसका प्रयोग कर अंधेरे में भी यात्रा कर सकता है ।

कौवे के वीट के प्रयोग

18-नींद न टूटे

विधि-किसी कौवे को पकड़ कर पिंजड़े में रक्खें और कपूर व शहद मिलाकर गेहूँ का आटा गूंथकर उस कौवे को खिलावे और उसकी बीट इकट्ठी करता रहे और छाया में सुखाता रहे । बस आवश्यकता पड़ने के समय जिस जीव को

सुलाये रखना हो उसके सोने के समय आग पर सात मिनट तक सुलगाये रक्खें और उसका धुंआ उस सोये हुए व्यक्ति को लगने दें । बस यदि मनुष्य होगा तो चार घण्टे और यदि पशु हुआ तो 1 दिन तक अपनी नींद से न उठेगा ।

19-चोर का पता लगाना

विधि-किसी मादा कौवे की बीट लेकर साये में सुखायें सूख जाने पर 1 तोला वीट नीम की पत्तियों के 1 छटांक रस में भली भांति घोटें । जब तनिक ही गीला रह जाय तब सरकण्डा की सींक पर इस लेप को चढ़ाकर बराबर-बाराब टुकड़ों में काट लो और सुरक्षित रख लें । जब कोई वस्तु चोरी जावे तो जिन-जिन व्यक्तियों पर सन्देह हो उनको एक लाइन में बिठाकर एक-एक तिनका सबको दे दें और एक तिनका लेकर सबकी दाहिनी आंख में सलाई की भांति फेर दें और उन लोगों से कह दें कि चोर का तिनका बढ़ जावेगा बस थोड़ी देर में या तो चोर आपको अलग बुलाकर सब कुछ बता देगा अन्यथा वह अपना तिनका अवष्य तोड़ डालेगा । आप थोड़ी देर के बाद सबके तिनके अलग-अलग नाप कर देखें। बस जिसका तिनका छोटा हो उसी को पकड़ कर चोरी का भेद जान लें ।

जीवित्त कौवे का प्रयोग

20-जादू टौने का प्रभाव दूर करना

विधि-अमावस को बहुत सुबह जागकर किसी कौवे

को घोंसले से पकड़ लावे और वह घोंसला कब्रिस्तान में हो तो अत्युत्तम होगा । घर लाकर उस कौआ के माथे व गरदन के चारों ओर केसर का लेप कर दें । सूर्य निकलते ही उसे उड़द के आटे का हलुआ जिसमें चीनी, लोहवान व गाय का घी मिला हो खिलावें और पानी के स्थान पर दही का तोड़ पीने को दें । इस प्रकार से उसे एक सप्ताह तक खिलावे, परन्तु इस सप्ताह के बीच में जो शनिवार पड़े उस दिन उस हलुआ में घी की जगह पर तेल और चीनी की जगह पर गुड़ मिलाकर एक लोहे के प्याले में सिंदूर लगाकर उसमें तांबे का टुकड़ा डालकर कौवे को खाने को दें । इससे कौवा सब हलुआ तो खा लेगा परन्तु तांबे का टुकड़ा पड़ा रहने देगा । आप उसको उठाकर सुरक्षित रखलें । और जिस दिन उस कौवे को पकड़ा था उसी दिन उसे उसका मुंह ऊपर को करके छोड़ दें अब आप उस तांबे के टुकड़े को किसी सुनार के पास ले जावे और उस पर एक ओर कौवे का चित्र अंकित करवा दें और दूसरी ओर एक तराजू का चित्र जिसके दोनों पलड़ समान ही बनवा लें और उस टुकड़े को आदमी के चित्र के आकार में कटवा लें और ऊपर की ओर एक छेद बनवा लें । बस जिस किसी व्यक्ति पर जादू टोने का प्रभाव समझ पड़े उसके गले में इसी ताबीज को पहिना दें । जिस घर में सन्देह हो उसका चौखट के नीचे गाढ़ दें या आग व खेत में भी सन्देह होने पर गाढ़ सकते हैं । आप विश्वास रखें कि

ऐसा करने से जादू टोने का प्रभाव बिल्कुल ही नष्ट हो जायेगा ।

21-यात्रा में थकावट न आवें

विधि-वृहस्पतिवार की आधी रात को आप किसी श्मशान या कब्रस्तान के पेड़ से एक नर कौवा पकड़ लावे और घर जाकर पिंजड़े में बन्द कर दें और तीन दिन तक पानी के साथ 1 तोला पान का रस पिलाते रहे और गेहूं का दलिया चुगाते रहें फिर पांच तोले पान के रस में एक तोला पारा डालकर खूब खरल करें । जब सब रस सूख जावे और पारा काले रंग का हो जाये तो इसे एक छटांक गेहूं के आटे में मिलाकर उसकी रोटी पकावें । पकने पर उनका मंलीदा बनाकर घी मिलाकर पाँच दिन में उसे धीरे-2 खिलादें । उसके बाद दसवीं रात को उस कौवे को उसी कब्रिस्तान में ले जाये और उस कब्रिस्तान के तीन चक्कर लगाकर बीच मे बैठकर अपना मुंह पश्चिम को करके उस कौवे को मार डाले और उनका पेट चीरकर आमाशय को फाड़े उसमें आपको पारे की एक चमकती हुई गोली मिलेगी । बस उसे घर ले आवे और 3 दिन व 3 रात गाय के पेशाब में डुबोये रक्खें 3 दिन तीन बाद उसे निकाल कर अपने पास सुरक्षित रखलें और यात्रा के समय इस गोली को मुंह में रखलें या कमर में बाँधकर जितनी चाहे यात्रा करें आपको बिलकुल ही थकावट न आयेगी ।

22-सट्टे से लाभ हो

विधि-नौचन्दी जुमेरात को एक कौवे को पकड़ कर घर लावे और उसे पकड़ने के समय उसका घोंसला भी भली-भांति देखलें कि उसमें कोई अण्डा तो नहीं है । यदि अण्डा भी मिल जाय तो बहुत ही शुभ और उत्तम है । अस्तु उन अण्डों को भी साथ ले आवे । कौवे को पिंजड़े में कर दे और यदि अण्डे भी मिले हैं तो उन्हें खरल में डालकर उसमें तीन रत्ती केशर और आधा माशा कपूर मिलाकर खूब घोंटे । जब यह खुश्क होने लगे तो उसकी गोली बनाकर साये में सुखाकर अपने पास सुरक्षित रखले और कौवे को नित्य दही शहद व केशर मिलाकर खिलाता रहे छटे दिन भी उसको दही आदि खिलाकर वह गोली अपने साथ लेकर आये और मन चाहा सौदा जब तक इसका परिणाम न ज्ञात हो तब तक उस कौवे को नित्य उसी रीति से खिलाता रहे । नतीजे में आपको निश्चय ही बहुत बड़ा लाभ होगा बस आप उसे नतीजा जान लेने के बाद उस कौवे को प्रणाम करके छोड़ दे और उस गोली को अपने पास रखे रहें दूसरा आवश्यकता के समय काम में आवे और जेब में इस गोली को रखकर आप कहीं भी किसी काम के लिए जावें ।

23-बिना चाबी के ताला खोलना

विधि-रविवार को पुष्य नक्षत्र में दोपहर को जाकर नंगे होकर किसी वृक्ष से कौवे का घोंसला बिना बोले उतार लावे

और उसे गूगल की धूनी देकर चिता की आग में जलाकर राख बनाले और उसे अपने पास सुरक्षित रखले बस इस राख को बन्द ताले पर मारने से ताला बिना चाबी के अपने आप खुल जायेगा ऐसा लिखा है ।

द्वितीय खण्ड

कौवा तन्त्र द्वारा दूसरों पर प्रभाव डालना
मोहन वशीकरण व आकर्षण प्रयोग

1-इच्छानुकूल विवाह

विधि-किसी शनिवार को दोपहर 12 बजे या 2 बजे के बीच किसी कौवे को पकड़ लें और मंगलवार तक घर में पिंजड़े में रखें और उसे नित्य दूध या दही में चीनी या शहद या दोनों चीजें मिलाकर अवश्य खिलावें । मंगल की आधी रात को उसे मारकर उसका दिल निकाल लें और जिस मार्ग से प्रेयसी गुजरती हो उस मार्ग में 6 इंच की गहराई में जमीन में गाढ़ दें । उस पर पांव रखवाकर प्रेयसी को भी निकालने का प्रयत्न करें और स्वयं भी उस पर से गुजरें ज्योंहि उस स्त्री का दाहिना पैर उस स्थान पर पड़ जायेगा । वह अवश्य ही वशीभूत हो जायेगी ।

2-रूठा हुआ पति खुश होकर वापिस आवे

विधि-नये चांद की पहली रात को आठ बजे के निकट यदि आपके प्रेमी पुरुष हों तो नर कौवा और स्त्री हो तो एक

मादा कौवा पकड़ कर घर लावें और रात में उसे कुछ भी खाने को न देकर पिंजड़े में बन्द कर दें । दूसरे दिन से उस साधारण आहार के साथ कच्चे दूध में 3 माशा केवड़े का जल केशर डालकर आठ दिन तक नित्य पिलाते रहें । चांद की नवीं रात को उसे मार डालें और उसका दिल निकाल लें और उसे सूर्य की रोशनी दें । जब वह भली भांति सूख जाय तब उस पर सिन्दूर लगाकर लाल कपड़े से लपेट कर लाल धागे से मजबूत बाँध दें बस आवश्यकता के समय रात में आप उस गोले को अपने दोनों हाथों से उसका ध्यान कर बड़े जोर से दबावें । बस आपका प्रेमी आपसे मिलने को बेताव होगा । आपसे आकर मिलने का पूरा प्रयत्न करेगा और मिलेगा ।

3-मोहन प्रयोग अघयन्त्र

विधि-किसी ऐसे बाग को तलाश करें जिसमें मीठे फलों का वृक्ष हो और उसमें पुराने बरगद का पेड़ भी हो और उस पर कौवे का घोंसला हो फिर नौचन्दी जुमेरात की आधी रात को वहां जाकर एक कौवी को पकड़ लावे और उसे अपने सीने से चिपका कर घर आवे और घर पर उसे किसी केशरिया रंग के झोले में डाल दें और झोले का मुंह बन्द करके अपने सिरहाने लटका कर सो जायें । सुबह उसे लोहे के पिंजड़े में बन्द कर और उसे साधारण दाना पानी दें। इसी भाँति उसे आठ दिन तक दिन में पिंजड़े में और रात में

झोले में करके सिरहाने लटका दिया करें। आठवें दिन उस कौवी को वहीं ले जाकर जहां इसे पकड़ा था मार डालें और उसका दिल निकाल दें। शेष भाग को वहीं जमीन में गाड़ दे और उस दिल को किसी लकड़ी की डिबिया में रखकर बन्द करके पूर्णमासी की रात को इसी प्रकार से रखा रहने दें। पूर्णिमा की रात को उस दिल को एक न घिसने वाले खरल में डालकर उसमें एक माशा कस्तूरी एक माश केशर एक माशा अम्बर और गुलाब की तीन पंखुड़ियां डालकर खूब घोटें। जब भली-भाँति घुट जाय तो किसी चन्दन की लकड़ी से उसे खुरच्च कर उसका एक गोला सा बनाले और उसे किसी कागज के डिब्बे में चन्दन के बुरादे की धूनी तब तक देते रहें जब तक कि वह बिल्कुल ही सूख न जाय। तब यह बिल्कुल सूख जाय तब गुलाब जल से चन्दन घिस कर उस पर तीन बार तिलक लगावें और केशर के रंग से रंग कर एक सूती कपड़ा उस गोले पर लपेट दें और उसे किसी बड़ी डिबिया में रखकर उस पर सिंदूर लगाकर गुलाब की पत्तियों से ढककर डिबिया को बन्द करके अपनें पास सुरक्षित रख लें आवश्यकता के समय जिस व्यक्ति को वश में करना हो उसके मार्ग में इस डिबिया को 6 इंच की गहराई में जमीन में गाढ़ दें।

4-स्त्री के मन का भेद जानना

विधि-किसी चन्द्रग्रहण की रात को 2 बजे के करीब

किसी कौवे को पकड़ कर अपने दाहिने हाथ में लेकर घर आवे और किसी लकड़ी या बाँस के बने हुए पिंजड़े में बन्द करदें सुबह उसको कुंए के पानी से भली-भाँति नहलावे और पिंजड़े को भी धो दें फिर पिंजड़े में हरे रंग का कपड़ा बिछा दें। एक घन्टे के बाद किसी कांसे के बर्तन में थोड़ी चीनी, धूप सफेद चन्दन का चूरा कपूर मस्तगी 3 रत्ती शुद्ध कस्तूरी को बेर की लकड़ी के अंगारों पर रखकर उसी बर्तन में रखें। जब इस धुंये से सारा कमरा भर जावे तब दूसरी ओर गेहूं की रोटी के मलीदे में खालिस घी चीनी मिलाकर खूब मसल कर उसको पिंजरे में रखें। जब वह आ जाये तब दूसरे बर्तन में थोड़ा अम्बर केशर डालकर पानी से पीकर उसको पिंजड़े में रख दें और पिंजड़े को ऐसे कमरे में रख दें जहाँ पर काफी प्रकाश व हवा पहुँचती हो बाद को जब वह पानी भी पी चुके और सारा खाना खाले तो 1 घन्टे के लिये खुली छत पर रख दें। दोपहर को केवल दही खिलादे और शाम को सुबह की ही भाँति भोजन दें।

इस क्रम से तीन दिन तक उसे खिलाने के बाद चौथे दिन उसे सुबह शहद मिलाकर पानी पीने को दें। जब वह यह पानी पीले तब उसके थोड़ी देर बाद उसे मार डाले और उनका पेट चीरकर उसका हृदय इतनी सावधानी से निकालें कि आपका अस्त्र उस हृदय को छूने न पावे। अब उस हृदय को तीन दिन खालिश शराब में डुबाये रखें। चौथे दिन उसे

निकाल कर सिंदूर से लथपथ करें और तीन ही दिन के लिये उसे लकड़ी की डिबिया में बन्द कर दें । चौथे दिन इसको खरल में डालकर ऊपर से कपूर गुलाब जल और केशर डालकर भली-भाँति खरल करें । जब यह लेही के समान हो जावे और खुश्क होने लगे । तब इसकी गोली बनाकर पुनः सिंदूर में लथेड़े और उसी लकड़ी के डिब्बे में बन्द कर लें । बस जिस स्त्री के मन का भेद जानना हो उसके सीने पर सोते समय रख दें । आप यह कौतुक देखकर आश्चर्य करेंगे कि वह स्त्री अपने मन के सारे भेद स्वयं बतला देगी ।

5-गुप्त भेद जानना

विधि-मंगलवार को दोपहर 12 बजे के बीच किसी कौवे को पकड़े और उसे घर लाकर 13 दिन तक नित्य जो कुछ भी खिलाये पिलायें उसमें शहद व गुलाब जल का प्रयोग अवश्य करें । तेरहवें दिन अर्थात् अगले रविवार को रात में उसकी गर्दन मरोड़कर मार डालें और तुरन्त उसका पेट चीरकर उसका दिल निकाल लें और किसी लकड़ी की डिबिया में बन्द करके सूखने के लिये रख दें करीब 15 दिन के बाद उसे निकालकर दूसरी डिबिया में डाल दें और इस डिबिया को सिंदूर से ढक दें और उसी के साथ 2-3 माशा शुद्ध कस्तूरी भी डाल दें और रात में सोते समय इसे खूब हिलाकर सो जायें 3 सप्ताह तक बिना नागा नित्य किया करें। आठवें दिन या जब कभी आपको किसी व्यक्ति के मनोभाव

जानने हों उस रात में सोते समय इस डिबिया को एकान्त में खोलकर सबसे छिपाकर उस आदमी का ध्यान करके उस पर थोड़ी देर तक गहरी निगाह जमावे और फिर बिना बोले ही सो जावे । निश्चय ही स्वप्न में रात को वह व्यक्ति मिलेगा और अपने मन का सब हाल बता देगा जो आपको सुबह तक याद रहेगा ।

6-अचूक भोहन प्रयोग

विधि-एक जगह लिखा है कि चांद की पहली तारीख रात को जंगल में जाकर एक जोड़ा कौवा पकड़ लावे और पिंजड़े में बन्द करके रख छोड़े । ग्यारह दिन तक उनको दिन में साधारण दाना पानी दें और रात में उबले हुए चावलों में घी और चीनी मिलाकार उसमें एक माशा चन्दन का तेल डाले और पिंजड़े को एकान्त में रखकर चावलों को कोरे बर्तन में रख लें और फिर पिंजड़े में लोवान को नीचे लिखे मन्त्र को 11 बार पढ़ें बाद में चावलों को नम करके उनके पिंजड़े में खाने के लिए रखकर आप सो जावें । दूसरे दिन जो चावल उसके खाने से बच गये हों उसको बीनकर सावधानी से जमीन में गाढ़ दें इस प्रकार से ग्यारह दिन बीतने पर बारहवें दिन उन दोनों को मार डाले और उनका रक्त व हृदय निकाल लें और उनके हृदयों को चांदी के यन्त्र में मढ़वाले और उसके रक्त को साये में सुखाकर खरल में पीसें । बाद को बारीक कपड़े से छानकर 3 मासा धनिया को इसमें मिलाकर सुरक्षित

रखलें । जब किसी को वश में करने को सब उपाय असफल हो चुके हों तब इस यन्त्र को पहन कर वहीं इत्र लगाकर उससे मिले यदि सम्भव हो तो कुछ इत्र उसके वस्त्र में लगा दें । जिससे कि वह सूख जाये । बस फिर आप इस प्रयोग का कौतुक देखें मन्त्र यह है ।

फूल हूसे फूल बक्से मीन नारसिंह बसे जो ले उनकी बास सौं चलि आवे मेरे पास अमुक की स्त्री अमुक गुरु की शक्ति फरो मन्त्र ईश्वर महादेव की माया चाटने कपूटी नर्क पड़ ।

नोट–उसमें अमुक के स्थान पर यदि लड़की हो तो माँ का नाम और यदि आदमी हो तो पिता का नाम कहें गुरु के स्थान पर अपने गुरु का नाम लें । यह प्रयोग बहुत ही अचूक है । अस्तु किसी बुरे विचार से कदापि न किया जावे ।

कौवे के भेजे के प्रयोग

7–वशीकरण तन्त्र

विधि–चांद की पहली तारीख को जब रविवार पड़े तब उस रात को किसी पेड़ के घोंसले से एक कौआ पकड़ लें और उसे 7 दिन तक नित्य साधारण दाना खिलाया करे अगले शनिवार की रात को करीब दस बजे उसे मारकर उसके सर से भेजा निकाल ले और सीने व बाज के 11 छोटे बाल लेकर और उसके सब शरीर को जमीन में गाढ़ दें फिर उस भेजे को एक छटांक चमेली के तेल में भली–भाँति घोटें और

किसी मिट्टी के बर्तन में भर दे फिर उन बालों को साफ रुई की तह पर रखकर उसकी बत्ती बनाले और दीपक में डाल दे । अब आप एक घन्टे के बाद यानि रात के ठीक 2 बजे किसी बाग में चमेली के वृक्ष के पास बैठ जायें । उस दीपक को वृक्ष के नीचें स्थापित कर आप वहाँ पर क़ाफी ग़ूगल सुलगा दे फिर दीपक को जलाकर नीचे लिखे मन्त्र को एक सौ बार पढ़ें । मन्त्र पढ़ने के समय आप देखेंगे फिर उस वृक्ष में 5 फल प्रगट हो गये हैं । अस्तु आप घबढ़ायें नहीं बल्कि प्रसन्नता से अपना कार्य पूरा समझकर वही मन्त्र पढ़कर फलों पर फूंक मारे बस एक ही दो बार में वह गायब हो जायेंगे । और आपकी प्रेयसी के दिल व दिमाग पर छा जायेंगे जब आपका मन्त्र पूरा हो जाय तब आप इस दीपक को बुझा दें और दीपक के शेष तेल को किसी शीशी में सुरक्षित रख लें। बस फिर उस प्रेयसी से आप मिलने जाये तो यही मन्त्र पढ़कर उस तेल को चेहरे पर मल ले निश्चय ही वह आपसे बिना प्रभावित हुए नहीं रह सकती । मन्त्र यह है ।

मन्त्र प्यारा परवाल सुस्सका क्लोन जकरा मंजरा खाऊ आठ पहर में घड़ी जगमोहन मेरा ताऊ ।

8-प्रेयसी प्रेम में व्याकुल हो

विधि-एक स्थान पर लिखा है कि यदि शनिवार के दिन किसी काले कौए की जवान चिता की राख और उसमें अपने हाथ पैर के बीस्सी नाखूनों की राख और जिसको वश

में करना हो उसके बाँये पैर के नीचे की मिट्टी तथा चौराहे की धूल इस सबको मिला कर पीसकर रवि या भौम के दिन अपनी प्रेयसी के ऊपर डाले तो वह निश्चय हो जाय ।

9-वशीकरण (अन्यत्र)

विधि-यदि सोमवार को अपनी बीसों नाखूनों और श्वेत कौवे की जवान को आग में जलाकर उसको अपने थूक में और बांये हाथ की अनामिका उंगली का रक्त मिलाकर सानकर उसकी छोटी गोलियां बनायें और उसी दिन इसकी एक गोली अपनी प्रेमिका को खिलावे तो निश्चय ही वश में हो जाय ।

10-मनुष्य के दिल का हाल जानने की विधि

विधि-कौवें की जवान और सहराई मेढ़क की जवान को एक डिब्बी में सुरक्षित रक्खें और किसी भी स्त्री या पुरुष के सोने पर सोते समय वह डिबिया रख दें बस वह अपने हृदय का हाल बता देगा ।

हड्डी के प्रयोग

11-गुप्त भेद जानना

विधि-यदि कौवे के दाहिने अंग की हड्डी रविवार पुष्य नक्षत्र में लेकर मनुष्य अपने दाहिने हाथ या दाहिनी जेब में रखकर जिस व्यक्ति के पास जाकर बैठे और बातें करे तो ज्यो-ज्यों समय बीतता जायेगा । वह अपने दिल की सभी

बात आपको बताता जायेगा ।

चर्बी के प्रयोग

12-सभी प्यार करें

विधि-कौवे की चर्बी अपने चेहरे पर मलकर जिसके समीप जावे प्यार करे ।

कौवे के बालों द्वारा प्रयोग

13-पति-पत्नी में प्रेम हो

विधि-पति के लिए उचित है कि वह किसी नर कौवे को पकड़कर उसी की पीठ के बालों को गूगल व कपूर की धूनी देकर जलाकर उनकी राख बनालें और वह प्रति रविवार को नहाने के बाद उसका तिलक लगाकर स्त्री सें मिले और यदि पत्नी कौवे की पूंछ के नीचे के बालों को सफेद चन्दन व हरमल की धूनी देकर तथा जलाकर राख बनावे और उस राख को मोतिया के फलों के अर्क में 3 दिन तर खरल करे फिर प्रत्येक वृहंस्पति को स्नान करने के बाद उसका टीका अपने माथे में लगावे तो निश्चय ही वह आपस में एक दूसरे से प्यार करने लगेगें ।

14 वशीकरण का प्रयोग

विधि-काले कौवे के पंख, मोर, पंख और हुदहुद पक्षी के सिर का ताज इन तीनों वस्तुओं को जलाकर इसकी राख में रविवार के दिन सूर्य निकलने से पहले चौराहे से उठाई

धूल को मिलाकर थूक से या पानी से गोलियाँ बनालें । बस यही गोली थूक में घिसकर जिसके बदन या वस्त्र में लगा दी जावेगी वह अवश्य ही वशीभूत हो जायेगा ।

15-प्रेम को वश में करने का एक अमोघ प्रयोग

विधि-चांद की पहली या दूसरी तारीख में एक कौवे को पकड़ लावे और घर पर पिंजड़े में रख छोड़ें और उसे अगले शनिवार तक साधारण दाना पानी दें । शनिवार की आधी रात् को एकान्त में स्वच्छ कमरे के बीच में इस पिंजड़े को रखें और स्वयं नीचे लिखे यन्त्र को कागज पर काली स्याही से लिखकर रुई में लपेटकर एक बत्ती बनावें और इस बत्ती को नये् मिट्टी के दीप में रखकर थोड़ा सरसों का तेल डाले और दीप को पिंजड़े के ऊपर रक्खें इसकी लौ दक्षिण की ओर होनी चाहिये । अब आप इस दीपक की लौ की ओर मुंह करके अर्थात् मुख करके पिंजड़े के सामने बैठ जावे और थोड़ा सा गूगल सुलगा कर नीचे लिखे मन्त्र को 41 बार इतनी जोर से पढ़ें कि आपकी आवाज को कौवा भली-भांति सुन सके । जब आपका जप समाप्त हो जाय तब बत्ती बढ़ाकर उस दीपक का सारा तेल व बत्ती जला दे और सुबह उस दीप को जमीन में गाढ़ दें । और दूसरे दिन नया दीप प्रयोग में लावें । इसी क्रम से 21 दिन पूरे हो मन्त्र को कौवा के दाहिने बाजू में बांधकर उस कौवा को जहां से पकड़ा था

वहीं ले जाकर छोड़ आवे तदनन्तर आप सीधे घर वापिस आवे और मुड़कर पीछे की ओर कदापि न देखें । बस आपका पूरा हो गया । आपका प्रेमी चाहे कितना ही निष्ठुर और कठोर क्यों हो वह आपके काबू में आ जायेगा । यह प्रयोग अनुभव और अचूक है इसलिये इसे साधारण कार्यों में या बुरी नीयत से कदापि न करें ।

मन्त्र यह है-

काला क़लवा काली रात काला भेजूं आधी रात. जब वह आवे आधी राततब मुझ लाग सारी रात कलवा वीर अमुक को उठा लाओ सोती को जगा लावो खड़ी को दौड़ा लावो हाल लावो फिलहाल लावो जोन लावो तो मन्त्र इस प्रकार से लिखें ।

9 22 29

काला कलता जो न लावे खड़ा को दौड़ा लावो

16 20 15 10

अमुक को हाल लावो कलवा वीर काली रात

7 6 11

बैठा को उठा लावो सेज पर धरे काला भेजू

22 12 13

तीसगी बहन भांजी के आधी रात जब वह आवे आधी रात

5

सोती को जगा आवो

नोट-मन्त्र जपने के समय अमुक के स्थान पर प्रेयसी का नाम माता सहित कहना चाहिए ।

पंख के प्रयोग

1-प्रेमियों में झगड़ा हो (अन्यत्र)

विधि-यदि सोमवार की रात को कौवे और उल्लू दोनों के पंखों को जलाकर राख बनाकर दूसरे दिन मंगल को उन दोनों प्रमियों के सर डाली जावे तो दोनों में कलह हो ।

रक्त का प्रयोग

विधि-अगर रविवार को कौवा और उल्लू दोनों के रक्त में दोनों प्रेमियों के वस्त्र भिगोकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात को जलाकर उन दोनों के सिर पर उसका राख डाले तो आपस में घोर शत्रुता हो जाये ।

नाखून का प्रयोग

3-आपस में झगड़ा हो

विधि-यदि अमावस्या की रात को लाया हुआ बिच्छू का सिर मंगलवार या रविवार को लाये हुए उल्लू के सिर के साथ कौवे के नाखून और चील व उल्लू के पंखों को एक साथ बारीक कूट पीस लें और फिर इस चूर्ण की चुटकी जिन-जिन के ऊपर डाले उनमें आपस में शत्रुता हो जाये । शत्रु स्थान छोड़कर भाग जाये

कौवा तन्त्र द्वारा उच्चाटन व पीड़न प्रयोग

घोंसले का प्रयोग

विधि-यदि मंगल के दिन कौवे का घोंसला उतारकर तथा जलाकर उसकी राख को जिस शत्रु के ऊपर या बिस्तर व कपड़ों पर डाले उसका अश्वमेव उच्चाटन हो ।

बाजू के प्रयोग

4-शत्रु बीमार या पागल हो

विधि-कौवे के दों बाजू का पंख और गीदड़ की पूंछ के बाल रविवार को लेकर उनको धूप की धूनी देकर यदि शत्रु के बिस्तर पर डाल दे तो वह निश्चय ही या तो बीमार हो जायेगा या पागल हो जायेगा ।

हड्डी का प्रयोग

5-शत्रु पीड़ित हो

विधि-यदि कौंवा की हड्डी की कील बनाकर नीचे लिखे मन्त्र से सात बार जप करके शत्रु के घर गाड़ दें तो वह अवश्य ही दुख या क्लेश में रहे ।

मन्त्र यह है-ओउम् जाँ जाँ जवो जिए जुँह टटः स्वाहा।

पंख का प्रयोग

6-शत्रु मुकाबला न कर सके

विधि-मंगल या रवि को काले घोड़े और बकरे के पैर के बाल, काले कौवा और काले मुर्गे के चार-चारपंख एक जगह जलाकर इस राख को पानी में डालकर खुद खरल करें

और मुकाबले के समय इसी का तिलक लगाकर यदि शत्रु के सामने जाये तो शत्रु का मुकाबला करने का साहस ही न पड़ेगा ।

दिल के प्रयोग

7-शत्रु का पराजित करना

विधि-मास का प्रथम चन्द्रदर्शन की सुबह को एक कौवा पकड़ ले और चार दिन तक उसे साधारण दाना देता रे । पाँचव दिन उसका मारकर उसका पट चीरकर दिल निकाल ल और शरीर क शष भाग का अपनी बसती क पश्चिम का ल जाकर जमीन मं गाढ़ द फिर उस दिन क दा दिन बाद तक अंगूरी सिरक मं डुबाय रखं तीसर दिन इस दिल का निकाल कर शुद्ध जल स साफ कर और धूप मं सुखालं । जब वे बिल्कुल सूख जाव ता उस चमली क तल मं डाकर तर करल फिर सिंदूर मं लपटकर किसी लकड़ी की डिबिया मं बन्द करक रखल और फिर` र वृ स्पतिवार का ी वे डिबिया खाला करं और उस पर एक बूंद चमली का तल या सिंदूर चढ़ा दिया करं ये डिबिया जब तक आपक वे ाँ रे गी और आप इसी नियम स तल व सिंदूर प्रति वृ स्पतिवार का चढ़ात रे ाग ता आपक शत्रु दब रे ंग ं और न आप व आपक परिवार पर जादू टाना` ी` ा सकगा और न काई बाधा` ी सता सकगी । आप इस किसी मे त्व पूर्ण यात्रा क समय भी इनकी साथ` ी रखं ।

चर्बी का प्रयोग

8-प्रतिद्वन्दी पर विजय पाने की विधि

विधि-(अ) यदि कोई प्रतिद्वन्दी शारीरिक शक्ति का मुकाबला करन वाला ` । ता विजय की इच्छा रखन क लिए उचित `` कि अपन दानां ` ।थां की ` थलियां पर और दानां पैरां क तलवां पर कौव की चर्बी की ` ल्की सी मालिश करं।

(ब) यदि मस्तक का मुकाबला ` । ता कौव की चर्बी का मोटा सा तिलक लगाकर शत्रु के सामने जावे ।

(स) यदि कोई वाद-विवाद प्रतियोगिता हो तो कौवे को पकड़कर उसकी चोंच किसी मुलायम फल पर जेसे केला अमरूद आदि में तीन बार घुसेड़कर निकाल लें और पक्षी को ऊपर घुमाकर छोड़ दें तथा स्वयं उस फल को खाकर प्रतियोगिता में भाग लें तो निश्चय ही वह जीतेगा ।

विभिन्न कार्यों के लिये विभिन्न प्रयोग

पंख के प्रयोग

1-अभियोग में विजय हो

विधि-यदि कोई व्यक्ति निर्दोष होने पर भी किसी अभियोग में फंसाया जा रहा हो तो उसे उचित है कि प्रत्येक मंगल की संन्धया के चार बजे के समय कौवा को खालिस सोटी चुरी में घी, शक्कर मसलकर खिलाया करें और पेशी के दिन कौवा की पीठ का पंख अपनी दाहिने जेब में डालकर अदालत के सामने जाय और बयान करें, यदि

न्यायाधीश को अधिक प्रभावित करना हो तो कौव्रा का दिल मार्ग में गाढ़ दें जिस पर से वह न्यायाधीश या विपक्षी लोग गुजंरते हों ।

3-राजदरबार में सम्मान हो

विधि-किसी दिन बहुत सुबह आप कोई कौवा उस पेड़ या बाग से पकड़ें जिसके निकट कोई मन्दिर, गिरजा या अन्य धार्मिक स्थान हो, कौवा को पकड़ कर लाल कपड़े में लपेट कर घर ले आवे लकड़ी के पिंजड़े में बन्द करें । परन्तु पिंजड़े के अन्दर भी लाल रंग का कपड़ा ही बिछाना चाहिये। अब आप उसे खालिस घी में पकाई हुई आटे की पुड़िया और दही में गुलाब यां केबड़ा जल मिलाकर खिलायें। पुड़ियों में यदि शहद भी लगे तो बहुत ही उत्तम है । फिर शेष सारे दिन में उसे चाहे जो कुछ खि्रलावें । इसी क्रम से उसे पांच दिन तक खिलावे और प्रत्येक रात को उसके पिंजड़े के सामने सफेद चन्दन हरमल व गुग्गल की धुनी दें । पांचवे दिन यह सब काम करकके कौवे के पंख में से सबसे बड़ा पंख उखाड़ ले और उसे दाहिने से बांये अपनी सर पर 3 बार घुमाकर उड़ा दें । बस अब आपको जब कभी किसी विशेष अवसर पर किसी विशेष व्यक्ति के पास जाना हो उस पंख पर जल छिड़ककर और केशर का तिलक लगाकर उसे अपनी दाहिनी जेब में या सिर की पगड़ी के दाहिने ओर लगाकर जायें तनश्चय ही आपको अप्रत्याशित सम्मान मिलेगा।

4-नौकरी में उन्नति हो

विधि-जिस किसी को अपनी नौकरी या व्यवसाय में उन्नति पानी हो उसे उचित है कि वह नित्य प्रति कुछ मीठे चावल पकाकर एक सप्ताह तक कौवों को खिलावे । जब कौवे काफी तादात में इकट्ठे होने लगें तो वह चावलों को मुट्ठी भरकर छप्पर पर फेंक दें । जिससे कि कौवे उसे खाने के लिये झपटे और आपस में लड़ें, जिससे उनके छोटे बाल जमीन पर गिर जावे । अब आप उन बालों को चुन लें जब आपके पास काफी तादात में बाल एकत्रित हो जायें तो उनमें शहद और मोम मिलाकर एक तागा सा बट लें और अपने पास सुरक्षित रख लें । बस कोई भी प्रार्थना पत्र लिखते समय या हस्ताक्षर करने के समय या किसी बड़े आदमी से मिलने जाने के समय इस तागे को दाहिने हाथ में बांधकर ईश्वर का स्मरण करके बात आरम्भ करके उस परमात्मा का कौतुक देखें ।

रक्त के प्रयोग

5-नौकरी प्राप्त हो

विधि-नौचन्दी जुमेरात को दोपहर को एक कौवा पकड़कर घर लावे और शनिवार तक उसे किसी पिंजड़े बन्द करके साधारण दाना पानी देते रहें, परन्तु रविवार को सुबह चीनी मिला हुआ दही दोपहर को उबले चावलों में दूध व चीनी मिलाकर खिलावे और शाम को कच्चे नारियल के पानी में

मिला हुआ बाजरा यदि बाजरा न मिले तो जवार या मकई दें। सोमवार सवेरे सूर्य निकलने से पहले घी से चुपड़ी हुई मोटी रोटी या पुआ पूरी खिलाकर उसकी नाभि से दो चार बूंद रक्त निकाल ले और उसी में बहुत थोड़ी लिखने की स्याही मिलाकर किसी दबात में सुरक्षित रख लें और साथ ही उस कौवे के एक दो बड़ा पंजा लेकर अपनी कामनी का ध्यान रखकर उस कौवे को सर घुमाकर छोड़ दें बस आवश्यकता के समय उसी पंख की कलम बनाकर उसी स्याही से किसी अच्छे दिन व समय पर किसी प्रार्थना पत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दें और बाद में जब उस प्रार्थना पत्र के सम्बन्ध में दौड़ धूप करें या इन्टरव्यू में जावे तो उसी काक पंख की कलम से जिससे हस्ताक्षर किये थे कुछ बाल काटकर कागज की पुड़िया में धरके अपनी दाहिनी जेब में रख कर जायें। आप विश्वास करें कि इस कार्य से आपको निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

नाखून के प्रयोग

6-हाकिम या अफसर मेहरवानी करें

विधि-चांद की ग्यारहवीं तारीख की रात में ग्यारह बजे किसी पेड़ के घोंसले में से एक जोड़ा कौवा पकड़ लावें, किन्तु इस कार्य के लिए आते या जाते समय पीछे मुड़कर कदापि न देखें। घर लाकर उन पक्षियों को पिंजड़े में बन्द कर साधारण दाना पानी दें। गुब [illegible]न दोनों पक्षियों के नाखून

काट लें और इन्हें ले जाकर वहीं छोड़ आवे जहां से पकड़ा था बस उस दिन से 11 दिन तक निम्नांकित मन्त्र से 2150 बार नित्य इन नाखूनों को रखकर जप कर लिया करें। जब ग्यारह दिन पूरे हो जाय तब इन नाखूनों को किसी कपड़े में रखकर ताबीज बनाले और जिस समय हाकिम के पास जाकर इसको अपने गले में छिपाकर या दाहिनी और किसी जगह छिपाकर पास रखें। निश्चय ही वह हाकिम उसका बहुत ख्याल करेगा। मन्त्र इस प्रकार है-

फेलं के चन्द्र मुखे सति का वर पड़े धन गढ़े सलाम कर बीमा जारी फलके स्लीम तोड़े फल, लगा तार सवा स्तुर बढ़िया लाग मेरी अड़ियां लाग सुन्दर कातरा बड़ फल से दिया जाम कड़ असत नाम आदेश करे।

7-जेब खाली न रहे

विधि-यदि पुष्य नक्षत्र में कौवा के दांये पैर का नाखून काटकर जेब में रखें तो उस व्यक्ति की जेब कभी खाली न रहेगी और यदि पुष्य नक्षत्र संयोग रविवार का पड़ जावे तो अति उत्तम है।

पंजों के प्रयोग

8-रेस में विजय हो

विधि-एकादशी को किसी कौवा को पकड़कर उसे गूगल की धूनी दें। **करीब** आधा घन्टा तक धूनी देने के बाद उसे अंगूरों का रस मिलाकर दही खिलावे। बाद में उसे किसी

हिरन की पीठ पर इस प्रकार से बिठाकर बांध दें जैसे कि वह सवारी करा रहा हो। बस फिर उन हिरन को खूब दौड़ायें 1 घन्टे के बाद उस कौआ को उसकी पीठ पर से खोल ले और उसे पुनः उसी प्रकार से दही में अंगूरों का रस मिलाकर खिलावे और धूनी देकर किसी लोहे के पिंजड़े में बन्द कर दें। दोपहर के समय उसको मारकर उसका दांया पंजा काट ले और लाश को जमीन में गाढ़ दें। और उस पंजे को छाये में सुखा लें। जब वह पंजा बिल्कुल सूख जाये तो उसके साथ थोड़ा सा उसी हिरन का नाखून भी काटकर किसी चांदी के ताबीज में मढ़वा लें बस इस ताबीज को गले में पहनकर यदि घोड़ा दौड़ाया जावे तो निश्चय ही रेस में सफलता मिलेगी।

जीवित कौआ द्वारा प्रयोग

9-परीक्षा में सफल हों

विधि-चौदहवीं के चांद की रात के पहले जब सूर्य अस्त हो रहा हो ठीक उसी समय किसी कौवे को पकड़ें और उसके गले से 1 लाल तांगा पहना दें। जिसमें कि कुछ दूरी पर सात गांठें लगी हुई हों और वह गाठें इतनी ढीली हों जिनको समय पर सहूलियत से खोला जा सके। बस इस तांगे को पहनाकर आप उस कौवे को तीन दिन तक साधारण दाना पानी दें परन्तु पीने के लिए जो पानी दें, इसमें वो चार छै बूंद शहद अवश्य मिला दिया करें। तीसरी शाम उस कौवे को ले जाकर जहां से पकड़ा था वहाँ छोड़ दें और उस लाल तांगे को

लेकर अपने घर आवे । बस जब कभी किसी परीक्षा में जाना हो तो स्नान करके स्वच्छ होकर ईश्वर स्मरण करते हुए सारी गाँठों को खोल डालें और उस तागे को मार्ग में चलते समय भी खोला जा सकता है अवश्य परीक्षा करके देखें ।

10-सफलता के लिए अनूभूत उपाय

विधि-यदि आप किसी मुकदमे, यात्रा या व्यापार के लिए जाना चाहते हैं तो आपको चाहिए कि काले पक्षियों के साथ भलाई करें अर्थात् उन्हें जाल से छुड़ावे । उनहें दाना चुगावे और चलते समय एक रोटी लेकर टुकड़े-2 करके अपने सिर के ऊपर से पीछे की ओर फेंक दें । यदि उस समय तमाम कौवों का झुंड झपट कर उन टुकड़ों को खाते हुए आपके पीछे चल दे तो आप यह समझ लें कि निश्चय ही आपको उस कार्य में महत्वूपण्र सफलता मिलेगी ।

घोंसले द्वारा प्रयोग

मनचाही सफलता तथा भाग्योदय कारक कुछ विशिष्ट उत्तर प्रयोग

11-भाग्योदय के लिए अनूठा प्रयोग

विधि-निम्नांकित प्रयोग बहुत ही महत्वूपर्ण हे और इसके सम्बन्ध में लोगों में भांति-2 की विधियां कही जाती हैं । परन्त निम्न विधि सर्वश्रेष्ठ है अस्तु इसको बड़ी सावधानी व सतर्कता से करना चाहिए साथ ही ध्यान रहे कि इस प्रयोग को किसी बुरी नीयत किसी को हानि पहुँचाने तथा

दुरुपयोग कदापि न करें अन्यथा एक कार्य चाहे हो ही जावे पर बाद को इसकी शक्ति नष्ट हो जावेगी । साथ ही कर्ता की हानि या अनिष्ट भी हो सकती है । प्रयोग विधि इस प्रकार है ।

विधि-सबसे पहले आप कोई ऐसी जगह तलाश करें जहां पर कौवों के तमाम घोंसले हों और उनके बच्चे देने का समय हो । ऐसे अवसर में आप वहां ऐसे समय जायें जो कि वहां बच्चों के अलावा कोई कौवा न हो अब आप सभी बच्चों के पैरों को घोड़े की दुम के काले बालों से बांध आवे और दूसरे दिन सुबह जाकर घोंसलों में बच्चों के पैरों को देखें। आपको यह देखकर आश्चर्य होगा कि उनके पैरों में बधा हुआ बाल खुल चुका है अब आप उनके पैर खुले पावे जब उन घोंसलों से उन बच्चों को निकाल कर बाहर रख दें और आप उन सभी घोंसलों को उखाड़कर घर ले आये । फिर अमावस्या की रात को ठीक बारह बजे सभी घोंसलों को लेकर किसी नदी या नहर पर जावे और उनके किनारे निर्भय होकर बैठ जावे और उन घोंसलों में से एक घोंसला बायं हाथ में लेकर उन घोंसले से एक तिनका दाहिने हाथ से निकाल कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसी बहते हुए पानी में डाल दें बस इसी प्रकार से प्रत्येक घोंसले से एक-एक तिनका डालें और तिनका डालने के कुछ सेकेन्ड बाद तक प्रतीक्षा करें । ऐसा करने पर उन घोंसलों में से कोई ऐसा घोंसला आपको अवश्य

मिलेगा जिसका तिनका वह मन्त्र पढ़कर डालने से नदी में बाढ़ सी आने लगेगी ऊंची-2 लहरें भी उठती दिखाई पड़ेगी और कुछ आवाज भी सुनाइ पड़ सकती हे । परन्तु आप पूर्ण निर्भय होकर अपने स्थान पर ही बैठे रहें और बिल्कुल ही न घबड़ायें और उस घोंसले जिसका तिनका डालने से ऐसा हल चला हो उसे मजबूती के समान हाथ में पकड़ लें 15 मिनट बाद जब वह हलचल शान्त हो जावे तब उसी मन्त्र से यानि (कोडे हमन्त बड़ा कौडे शाह अस्मबेड़ा) यही मन्त्र तिनका डालने के समय भी पढ़ना चाहिए बस उस घोंसले को दहिने हाथ से चूमें और सीने से लगाकर घर आवे और उस घोंसले के प्रत्येक तिनका को सिंदूर से लपेट कर किसी लकड़ी की डिबिया में बन्द करके सुरक्षित रखलें और उसी डिबिया में थोड़ा कपूर भी डाल दें । बस. फिर आवश्यकता पड़ने पर तिनको में से 1-2 तिनके से 1-1 काम लें इस समय आप 1 महान् शक्ति के मालिक हैं । इन तिनकों का प्रयोग निम्न रूप से करें ।

(अ) अब आपको कहीं किसी से मिलने जाना हो या इन तिनकों का प्रयोग में लाना हो, उस समय शुद्ध या दही की लस्सी में उस डिबिया से 1 तिनका निकालकर नहलाये फिर अपनी पगड़ी या टोपी या दाहिनी जेब में रखकर जिससे मिलना हो उसके पास जावे ।

(ब) किसी रोगी के गले में ताबीज बनाकर डालें ।

(स) भूत प्रेत की बाधा वाले व्यक्ति को भी उसी प्रकार पहनावे ।

(द) किसी तांवे, चांदी या कपड़े के ताबीज में रखकर बंदरों के गले में पहनावे ।

12-मनचाही सफलता के लिए दो अन्य प्रयोग

किसी भी परीक्षा व्यापार या मुकदमे आदि के आवश्यक कामों में प्रयोग में लावे पर पूआ आदि में प्रयोग में न लावे बस यह एक अद्‌भुत सफलता दायक प्रयोग है ।

(अ) हजारों कौवा में 1 ऐसा भी कौवा निकल सकता है जिसके दुम में 1 सुनहरा बाल होता है, यदि वह बाल सौभाग्य से प्राप्त हो जाय तो उसे कपूर व सिंदूर के साथ किसी लकड़ी की डिबिया में रख लें । इससे निश्चय ही आप पर लक्ष्मी की असीम कृपा होगी और प्रत्येक इच्छित कार्य में आपको निश्चय ही सफलता मिलेगी ।

(ब) इसी प्रकार से आपको ऐसा भी कौवा मिल सकता है । जिसके पंजे के 1 या सारे नाखून गुलाबी रंग के समान लाल हो यदि वह नाखून के किसी प्रकार से मिल जाये तो उसे काटकर सोने के ताबीज में मढ़वाकर किसी सफेद या काले तागे में पिरोकर अपने गले में लटकाकर जहाँ भी जावे या जिससे भी बात करें । वह निश्चय ही उस व्यक्ति का मन चाहा काम कर देगा ।

कौवा पक्षी पर प्राचीन ग्रन्थों के मत

तन्त्र बसन्तराज

अथौचयते कौंकरु‍ रुतानां मुध्नि स्थितं शाकुनभाषितलाभ अचिन्ति ताचिन्ततिभू‍ कार्य पूर्वादिकोष्ठा प्रहरक्रमण । ये ब्रह्मणक्षत्रियवश। शुद्धाः काका भवन्त्यजपन्चमास्ते । वर्णाकृतिभ्यामृषिता भ्यां सदेव युक्तैरुपलक्षणियाः वृन्दृन्पसाणो गुरुदीधतुप्डो दढ़स्वरः कृष्णवपुः संव्रिपः । पिंगाक्षनीलास्यविंपिश्रवपः स्यात क्षत्रियौरुरवोष्णिशुर ।। आपण्डुनोलः सितनीलचच्चु नत्यिन्तस्क्षारटितच्च वैश्य । भस्मच्छविर्भुरिकारशब्द । कृशागाजचपलो अतिरुक्षः । विरक्षसूक्ष्नास्यतनुविकी यः कन्धरां दीर्घ तर विभूक्ति । स्यिरारब्रः स्थ्ययसमेतबुद्धकाको अन्य जाति स तु पंचमोअब । द्रोणाभिध :तनुद्विजेस्यो ग्राहयः स काकः खलुः मुखयबृत्यो । तस्मादते श्यामगलो निरीक्षयः श्वेतस्तु नित्द्य अद्‌भुददर्शनाअहो । सद्‌यत्रिसप्ताहदशाहक्ष पश्चापि काकाः भलका क्रमेणं ।

अब कौआ के शब्द बताते हैं सिर पर बैठकर बोले तो शकुन शास्त्र के जानने वालों ने जैसा कहा है उसको कहते हैं कार्यो का होना बोलने का समय हर प्रहर में बोलने का अलग-2 फल होता है ।

कौवा पांच प्रकार जाति वर्ण के होते हैं । वाह्य क्षत्रिय वैश्य अत्यन्त ये जाति-स्वभाव के अनुसार फल कारक होते हैं । उनका वर्ण रूप रिषियों ने जिस प्रकार वर्णन किया हे । उनका लक्षण सहित वर्णन किया जाता है । जो कौवा बहुत

मोटे बड़ी चोंच वाले कर्कश बोलने वाले काले रंग वाले होते वो ब्राह्मण जाति के होते हैं । पीली आँख तथा नीला पीला मिश्रित रंग वाले रूखा शब्द बोलने वाले अति शूर क्षत्रिय वर्ण के होते हैं । पीला नीला रंग मिश्रित कुछ सफेदी लिए नीली चोंच वाले अत्यन्त रूखा शब्द बोलने वाले वैश्य जाति के होते हैं ।

राख के माफिक राग बाल दुर्बल चंचल स्वभाव से युक्त बड़ी जोर से बोलने वाले शूद्र जाति के होते हैं । विशेष रूखे छोटे मुंह वाले निर्भय, देर तक बोलने वाले ऐसे कौवे अत्यन्त जाति स्वभाव वाले होते हैं । काला कौवा ब्राह्मणों को ग्राह्य हैं ऐसे कौवे निश्चय करके ग्राह्य करने से पहले काले गले वाले को देखकर विचार करना चाहिए । सफेद और अद्‌भुत देख पड़ने वाले निन्दित होते हैं । इसका फल तत्काल 3 दिन में 10 दिन में 15 दिन में पाँचों प्रकार के कौवों में से फलदायक होते हैं ।

विष्णुधर्मोत्तरे ।

पुरतो धनलब्धि स्यादा मास्य छवने ।
थूलब्धिः स्यान्सृद, क्षपे राज्य, रत्रापणे महत् ॥

विष्णुयाग में लिखा है कि मास लिए सन्मुख कौवा देख पड़े तो धन का लाभ होता है और मिट्टी गिराता हुआ सम्मुख देख पड़े तो पृथ्वी का लाभ होता हे । रत्न गिरावे तो राज्य प्राप्त होता है ।

पराशर: शास्त्र :

प्रथमं यस्याग्रस्त आममास छंद यस्त्रस्य धनागनं वेदयति गुड़ गुडभक्तं वा फनस्य । पायस दुग्धदधि व स्त्रियाः पुत्रस्यः सुहृदो नार्याबा । शर्कशाँ सहिणयामन्नं वा वालान कीटान कृमि वा छदयन् शस्यलाभ पापसमागम वा स्त्रीलम्म् । मत्तिकामन्वत अहित्य सयने काष्ठागारे वा पूर्णभूमिलाखय । अन्य शकुनिमग्रतौ वस्त्रलाभाय । अमामाँस सुवर्णागमीय । षदम्या तणानि देशांतर रथस्यः पयसो वा लाभायः । अग्रतः पाशकर्दमं चाश्रांति ब्रत प्रवासायाया वभक्त गूडवा धनागलाय। तुणडे न जलं प्रियधनां वाप्तये । वामतो दधिसर्पिथो गवामन्यम्य च लाभाया । अग्रतः फल बेधस्य लाभाय शक्ल चलै स्त्रीलाभाय ।

पाराशर का कहना कि पहले जिसके आगे कौवा मांस गिराता हुआ पड़े उसका धन प्राप्त होता है गुड़ अथवा भात गिरावे तो धनागमन होता है खीर दूध दही युक्त सम्मुख देख पड़े तो स्त्री पुत्र सुहृद की प्राप्ति होती है । शर्करा सोना अनन कृमि कीट गिरावे तो अन्न का लाभ पापियों का समागम स्त्री का लाभ होता है । दूसरे स्थान से मिट्टी लाकर कौवा कोठे में सोने की जगह में गिरावे तो पूर्ण पृथ्वी का लाभ होता है। और जो सगुन है उनसे वस्तु का लाभ होता है सम्मुख मांस युक्त हो तो सोना मिलता है पांव में त्रण अथवा खीर लिये हो तो प्रदेश में लाभ होता है । सम्मुख कीचड़ खाता दीख

पड़े तो विदेश जाना पड़ता है । भात गुड़ खाता हुआ धन का लाभ करता हैं चोंच में जल उठाता हुआ वांछित धन कारक होता है । बांये तरफ दही घी युत देख पड़े तो और अन्न की प्राप्ति होती है । फल देख पड़े तो विश्व को लाभ होता है। सफेद कपड़ा युक्त दीखे तो स्त्री लाभ करता है ।

विष्णु धर्मोत्तरे :

प्रोषिनागमानं काकः कुर्बनः द्वारि गतगतम् ।

विष्णु धर्मोत्तर में लिखा है कौआ द्वार पर बार-बार आवे तो परदेशी का आगमन हो ।

पराशरः

गृहद्वारि चेदगातं कुर्यदागन्तमां समागनं कुर्यात् यस्य वेव्म न्यार्द्र लेख पाययेतु तस्य विद्यागोमो भवतु आर्द्र काष्ठलाभाय आर्द्र पक्षी वाडन्न मुखोडप्याति श्रीलाभायसे चैल परामृष्य ग्रहे तिष्ठन क्षमाय । तुणडेन वोहासु गोडश्चकुछजरवेस्म सुपुत्र लाभाय ।

पराशर का कहना है कि घर के द्वार कौआ आवे तो आगन्तुक का समागम होता है । जिसके घर में लिखा हुआ गीला कागज फेंकें उसको विद्या की प्राप्ति होती है गीले पंख से अथवा मुख में अन्न लिये हो तो बहुत लाभ है । कपड़ा सहित घर में आवे फेकें कल्याण कारक होता है । चोंच ले चावल गोशाला में घुड़शाला हाथी के स्थान में हो तो सुपुत्र की प्राप्ति होती है ।

वराहसहितायात् :

शस्यौपेते क्षेत्रे विरुबति शाँन्ते सशस्यभूलब्धिः ।
पुरती जनस्य महती बधमभिधते यदा बाल भुक ।।
अन्योन्यभक्ष संक्रोभिनानने तुष्टिरुन्त मा मवात् ।
विज्ञेयः स्त्रीलाभो दम्पत्योबशतो युगपत् ।।
प्रेमदाशिर उपगत पुणकुम्भसस्थेऽगनार्थसम्प्राप्ति ।
घटचुटटन सुताबपदधटौपहवनेउ अर्थसप्राप्ति ।।

इसी प्रकार वराह संहिता में कहा है । अन्न से पूर्ण खेत में कौवा बोले तो खेत में अन्न खूब होता है और जो सम्मुख बोले तो कोई श्रेष्ठ जन की मृत्यु की सूचना होती है । और तो दूसरे से खाने को छीनकर खावे तो मन का सन्तोष होता है कौवे आपस में खाते यात्रा के समय देख पड़े तो विजय होती है । स्त्री का लाभ भी होता है । जो स्त्री सिर पर घड़ा लिए हो उसमें जल भी हो तो ऐसे घड़े का स्पर्श करें तो स्त्री की प्राप्ति होती है । घड़े को चोंच से फोड़े तो पुत्रों की हानि होती है । और जो घड़े पर बैठकर खाय तो अन्न धन की प्राप्ति होती है ।

पराशरेस्तु :

पक्षीनुत्सार्यानीय पुच्छमञ्जसा रुति कुर्वन्तस्तु षडवडियन्यान्य स्पृशेयुः स्त्रीलाभ स्यात । परस्परामारोह येय पुत्रैण भूमिलाभस्यात

पाराशर ऋषि का कहना है कि पंख फैलाकर पूंछ

उठाकर जो कौवा जोर से बोले और चोंच से दूसरे को छूवे, तो स्त्री का लाभ होता है । परस्पर एक दूसरे पर चढ़े तो भूमि का लाभ होता है ।

वराह संहिता में कहा है कि खूब चिकना हरा पत्ता फूल के सहित मीठे फल के सहित जिन वृक्षों के दूध भी निकलता है ऐसे वृक्ष पर जो कौवा बैठा दीख पड़े ता कामना को पूर्ण करता है । पत्ता फल लाकर छत अटारी और घर में फेंके तो धन का आगमन होता है ।

बसन्तराज में लिखा है कि मटका अथवा घड़े पर बोले तो गर्भिणी के शत्रु प्रसव होता है । काटा सहित शाखा लेकर उड़े तो राजा के आगमन की सूचना होती है । छात में उड़े तो अर्थ का लाभ होता है जमीन पर उड़े तो भूमि का लाभ होता है जल के ऊपर जो उड़े तो विघ्न और कार्य नाश होता है । बोलता हुआ कौआ उड़ता देख पड़े तो विदेश गमन है सूचना होती है ।

वराहसंहितायाम् :

शक्षीरार्जुनवञ्जलकूलद्वयपुलिनगा रुवन्तश्च ।
प्राबृषि बृष्टि दुर्दिनगनुतो स्त्राश्च पाँशूजलैः ।
सलिलमवलावघ विरुवन वृष्टिकरोडदानुकारीच।

वाराहसंहिता में लिखा है कि दूध वाले वृक्ष के पत्ते अर्जुन वृक्ष का पत्ता वगई लेकर नदी के दोनों किनारे पर बोलता देख पड़े वर्षाकाल में वर्षा होती है और जल नहाता

देख पड़े तो दुर्दिन की सूचना होती हैं । और जल में परछाई देखकर बोले तो वृष्टि होती है ।

विष्णु धर्मोत्तरे :

शास्त्रगवाहनोगानच स्त्रादिंकूटने ।
मत्युसतत्प्रजने पूजा तद्वद्विठाकरमभम् ।।

विष्णु धर्मोत्तर में लिखा है शास्त्र अंग वाहन जूता, शस्त्र वस्त्र आदि में चोंच मारने से स्वामी की मृत्यु की सूचना होती है । ऐसा होने पर पूजा करनी चाहिए ।

वृहद्यात्रायां वराह :

उपान चच्छस्त्रयानागचछत्र चच्छायाव कुटुटने ।
सृत्यु तत्स्वामिनी विद्यात पूजा स्यात तस्य पूजने ।।

संहितायाँ तु विशेष :

वाहनशस्त्र पानच्चत चच्छापांगकुटूटने मरणम ।
तत्पूजाय विष्ठा पज करणड़न्वसप्राप्ति ।।

संहिता में विशेष कर लिखा है वाहन शस्त्र जूता छाया अथवा अंग में चोंच मारने पर तथा छाया में चोंच मारने पर मृत्यु का भय होता है । इस दोष को दूर करने के लिए काक स्पर्श शान्ति काक भिष्ठा की पूजा करनी चाहिए । इससे अन्न की प्राप्ति होती है

पाराशर:

अनामिष छत्रमुपाहना व तुणडैंस्वकुट्टयन स महाभायाय. शयने शरकाड विनाशाय । दूर्वाकेशाश्च क्लविन्यशयातालपत्रमशी

वलवल श्रेष्ठचमवित प्रदेशाय त पदानशलने विलिखनु नाशाय एव्र । शष्ककाष्ठजीर्ण चैल विनाशाय । यस्य शयना मुत्रवेतु तस्य भार्या दुष्टाँ विद्ययत ।

पाराशर का मत है कि मांस छाया जूता में चोंच मारने से महाभय होता है शयन के समय में स्पर्श करने पर विनाश कारक होता है दुर्वा व बाल चारपाई पर छोड़े तो कुल का विनाश होता है । स्याही से तढ़के पत्ते पर कपड़े पर श्रेष्ठ चमड़े पर चौंपायों के रहने के स्थान में लिखे तो महा हानि होती है । सूखे काठ पर लिखे तो विनाश होता है । जिसके खटिया पर कौआ मूते उसकी स्त्री दुष्टा जानिये । बड़ी मात्रा में वराह का वचन है कि कोई चीज लेकर भागे अथवा फेंकें लेकर भागने वाली वस्तु की हानि फेंकने वाली नीली पीली वस्तु की प्राप्ति होती है ।

महद्यात्रायां वराह :

हरेदुमलभद्वाडपि यदद्वयहुय वायसोडंग्रतः
तत्वाप्ति नाशो विक्षेपौ हेमपीने विनिर्दिशेतु।
हतस्य नाश उपनीतस्य प्राप्ति ।
यादाह बराहसंहितायाम् ।

यदुद्रव्यसुनैयेत त स्तलब्धिरपसरति चेतु प्रणाशः स्यात् । पीत5 द्रव्य कनक वस्तु कापासिके सितं रुस्याम् ।

ऐसा ही वराह संहिता में लिखा है जो चीज़ फेंके उसकी प्राप्ति जो ले जाया उसकी हानि जानना । पीला सोना,

सफेद कपड़ा चांदी जानना चाहिए ।

विष्णु धर्मोत्तरे :

यच्चवीपनयेद्द्रव्य तस्य लब्धि विनिदशेतु ।
द्रव्य वाडपयेचस्तु तस्य हानिद्विजोत्तम् ।
पीतं शुष्क तरा रूक्ष रूप्यमेव तु भार्गव ।

विष्णु धर्मोत्तर में लिखा है जो चीज फेंक जाय उसका लाभ जो ले जाय उसकी हानि जानना चाहिए । पीला सोना, सफेद चांदी रूखा कपड़ा जानना चाहिए ।

बसन्तराजव्श्र

द्रव्य हरन् वा हरतोह याद्रकु प्राणशालाभवपि ताद्रशस्य।
रूक्षस्य पीते रजस्य शुक्ले चलस्य माना समर्थ भवेताम् ।

बसन्तराज का मत, जैसी वस्तु है ले जाय या फेंक जाय वैसा ही लाभ हानि समझना चाहिये रूखा वस्तु कपड़ा पीला सोना सफेद चांदी जानना चाहिये ।

पाराशर का मत है कि सूखे गोबर के ढेर पांव से लिखे नवीन पलाश का पत्ता अथवा भोज पत्र लेकर उड़ जाय तो वस्त्र का लाभ होता है । वह किसी वस्तु रखी हुई लेकर जाय तो उस वस्तु का नाश होता है ।

वराह संहिता में लिखा है चोंच पूरी भरकर ले भागे और गिरता हुआ जाय तो मनुष्यों का समागम होता है ।

पराशर का मत है कि लेकर भागे वस्तु को देखता रहे और देखकर गिरावे तो व्याधि भय मरने की सूचना करता है।

वाराह का मत है कि घर में घुसते समय पंख हिलाता हुआ कौवा बोले तो दूसरे घर में रहने की सूचना करता है । पंख न हिलाता हो तो भय मात्र जानना चाहिए । ये बात बड़ी यात्रा के समय में विचारना चाहिये । इसी प्रकार से सेना के प्रवेश के समय गिद्ध के साथ कौवा मांस लेकर आवे तो युद्ध का विराम समझना शत्रु से प्रीत्ति की सूचना कारक होता है और विरोधी के सामने पंख हिलाता भया देख पड़े तो उसको भी भयकारक होता है और युद्ध यात्रा के समय कौवा स्पर्श करे तो मौत की सूचना देता है ।

बसन्त राज का मत है सेना के जाते समय ऊपर को पंख कौवा गिरावे या कुदान करे तो प्रलय संहार कारक होता है और क्रोध कर ऊपर बैठ जाये तो रोग से मौत है । दरवाजे पर खून से लिपटा कपड़ा फेंके तो बालक की मौत जानना चाहिए । इसी प्रकार से द्वार पर पंख फड़कावे रूखा शब्द करे अथवा वस्तु के वास्ते रुदन करे तो ठीक नहीं और अग्नि का भय सूचक होता है । इसी प्रकार कहीं जाते समय शब्द करे तो 3 दिन में भय की सूचना करता है ।

पाराशर का मत है कि प्रसन्न मत कौवा डोरा को लपेटे अथवां कपड़ा ले भागे, फेरी फिरे तो कामना पूर्ण हो । जिसके आगे जमीन पर रस्सी गिराये उसको सर्प या चोर का भय होता है । रास्ते में पत्ते के सहित डाली गिरावे तो नाशकारी फल होता है । रास्ते में आये रस्सी खींचता देख

पड़े तो सर्प अथवा चोर का भय समझना चाहिये ।

विष्णु धर्मोत्तर में लिखा है रस्सी को खींचता भया देख पड़े तो बन्धन की सूचना देता है ।

वाराह संहिता में लिखा है रस्सी कपड़ा अथवा किसी चीज में बंधा वस्तु लाकर खाये तो बन्धन की सूचक जानना पत्थर में खाता हुआ मार्ग दीख पड़े तो भय सूचक जानना ।

विंष्णु धर्मोत्तर में लिखा हे कि लाल वस्तु या जली वस्तु देख पड़े तो अग्नि का भय जानना चाहिये ।

वाराह संहिता में और भी लिखा है, अग्नि युक्त वस्तु को लेकर पेड़ पर बैठकर अद्विगन मन से पर को हिलाता हुआ देख पड़े तो अग्नि का भय जानना चाहिए लाल रंग का जला कपड़ा अथवा जला हुआ तृण या काष्ठ फेंके तो अग्नि का भय जानना चाहिये ।

पराशर का कहना है कि सिर को कांपता हुआ अथवा खाता हुआ अथवा कांकर लेकर गाँव घर की तरफ जाय तो अग्नि कौण में भय जानना चाहिये । तृण डोरा रस्सी रुई लेकर धोवे तो अग्नि का भय जानना, सूखे काठ से चोर का भय जानना, पंख हिलाता हुआ घर में कुछ लिखे तो कुटुम्बिनी को दुष्ट जानना । स्त्री के बांये तरफ से घर में घुसने से विध वा होने की सूचना करता है । बहुत से कौवे घर में बार-बार भ्रमण करें तो स्त्री का विनाश जानना परस्पर एक दूसरे को मारे तो स्वजनों से बैर कराते हैं घर के ऊपर उड़े और गिरे तो

राजा का आगमन होता है अथवा जिन्दा मूसा लेकर घर में गिरावे तो धन हानि जानना और मरा मूसा गिराते तो कलह होता है अथवा पूंछ पकड़ कर खींचे और चलावे तो सर्वस्व की हानि होती है ।

इसी तरह वराह संहिता में लिखा हे कि मूसा को लेकर पीछे या दाहिने जाय तो घाव हो, ऐसा फल होता है पांव से पकड़कर ऊपर देखता हुआ चिल्लाये तो रुधिर विकार करता है सूर्य को देखता हुआ एक पांव से या चोंच से लिखे अथवा आगे पूंछ से लिखे तो वध हो, ऐसा फल होता है ।

पाराशर का कहना है कि सूर्योदय के समय किसी जीव को चोंच से फाड़े तो राजा अथवा मन्त्री के वध की सूचना होती है ।

वराह का वचन है कि मुर्दे के शरीर पर बैठकर बोले तो मृत्यु की सूचना करता है हड्डी खाता हुआ बोले तो हड्डी टूटे ये होता है । रस्सी हड्डी काठ कांट लेकर सिरहाने या सम्मुख बोले साँप काटने का भय हो रोग हो दांत वाले जीवों से भय अथवा का भय या अग्नि का भय होता है । ऊपर मुख किये हुए पंख हिलाते भूख प्यास की पीड़ा होती है । ऐसा सगुन युद्धं सेना नौकरों के सहारे की सूचना देता है । काठ रस्सी हड्डी निस्सार वस्तु या कांटा लेकर बोले तो सर्प का भय रोग भय शस्त्र भय अग्नि भय चोरों से भय होता है। रात में कौवा बोलता हुआ उ ो विनाश दुर्भिक्ष का फल

होता है ।

पाराशर का मत है कि रात्रि के समय आकाश में झुन्ड के झुन्ड कौवे बोले तो राजा प्रजा का भय होता है सन्ध्या के समय सबसे ऊंचे उड़े तो अन्न का भय होता है ।

मत्स्य पुराण में लिखा है कि अन्न मुख में लेकर कौवा उड़े तो दुर्भिक्ष होता है । संग्राम की सूचना देता है तथा मनुष्यों को कष्ट होता है ।

पाराशर का मत है कि धान्य सिर पर रखकर कांपे अथवा विष्ठा खाये तो अकाल पड़ता है ।

वाराह ऋषि का कहना है कि ये फल बड़ी यात्रा में विचारणीय हैं ये सब वृहस्पति संहिता में वर्णन है बिनामतलब झुण्ड के झुण्ड गोलाकार होकर कौवे घेरे और सब वर्ण के हों तो घातक होता है शत्रुओं की वृद्धि होती है, शत्रु निर्भय होते हैं । सब वर्ण के कौवे चक्राकार होकर गाँव को घेरे तो भूख का भय होता है विदेश यात्रा होती है । इसी प्रकार निर्भय होकर चोंच, पंख और चरण से मारे तो शत्रु की वृद्धि होती है और जो केवल उड़े तो जन विनाश होता है । दाहिने होकर आकाश में उड़े तो बड़ी व्याकुलता होती है और बाँये उड़े तो शान्ति होती है ।

विष्णु धर्मोत्तर में लिखा है कि बाँये भी कौवों का झुन्ड उड़े तो रण की सूचना होती है ।

महाभारत भीष्म पर्व में लिखा है कि मन्डलाकार होकर

कौवे बांये तरफ चिल्लाते हैं । मानो कुरु वंश के क्षय की सूचना देते हैं । वाल्मीकि रामायण में इस प्रकार से लिखा है।

बसन्तराज का मत है कि बिना कारण इकट्ठा होकर कौवे जिस गांव में रोवें उस गांव का नाश होता है । दाहिने बांये इकट्ठा होकर चारों तरफ से घेरे तो भय होता है । कौवों का पर्व इत्यादि पर मरना और रात में रोना जन विनाश की सूचना करता है । मनुष्यों को चोंच से प्रहार करे तो घबराहट होती है और शत्रु की वृद्धि होती है ।

सुन्दर काण्ड रामायण में रावण वध की सूचना है । झुन्ड के झुन्ड कौवे विमान के ऊपर इधर-उधर मंडराते हुए मरण की सूचना देते थे ।

पाराशर का मत है कि भयभीत होकर कौवा सिर के ऊपर उड़े और बोले और रोवे तो युद्ध की सूचना करता है अथवा अग्निशाला में से रूखी वस्तु लेकर भागे तो कुल के बेड़े का नाश होता है दीवार से लेकरभागे तो कुल श्रेष्ठ का विनाश होता है । शयन के स्थान से ले भागे तो कुटुम्बियों का नाश होता है । घड़े में से लेकर भागे तो कुटुम्ब की औरत दुष्ट होती है । लाल वस्तु ले जाय तो तांबा का आगमन होता है काली वस्तु ले जाय तो लोहे का आगमन होता है । सफेद से चांदी का आगमन होता है । ध्वजा पताका हथियार पर बैठकर बोले तो सेना का नाश होता है ! आपस में पंखों के मिलाने वस्त्र का आगमन होता है । बांये से दाहिने कौआ का

झुण्ड आवे तो अपने पक्ष के लोगों के आगमन की सूचना होती है । दाहिने से बां: आवे तो शत्रुओं के आगमन की सूचना होती है । वृक्ष के पत्तों को देखे भक्ष्य पदार्थों की प्राप्ति होती है । मध्यान्ह में सिर गले तथा मस्तक का व्यवहार करे तो शत्रु का उत्पात होता है दिन में कौवा पुर अटारी पर विहार करें तो पुर का नाश हाता है । खूब जोर से बोलता हुआ कौवा सम्मुख उड़े तो सेना, गांव व शक्ति का नाश होता हे । अग्नि कोण में अग्नि का भय दक्षिण से मरण भय नेतृत्व में राक्षसों का भय, बायव्य में वायु का वेग उत्तम में शास्त्रों का कोप, ईशान में वर्षा का भय हो । इन दिशाओं में उड़े और इसी प्रकार का फल होता है । ऊपर मुख करके उड़े और नीचे आवें तो उपद्रव की सूचना करता है ।

वाराह संहिता में लिखा हे कि पूर्वादि दिशाओं का अवलोकन करता हुआ सूर्य को देखता हुआ रुदन करे तो घर में घर स्वामी को राज भय चोर भय शान्त भाव से पूर्व दिशा को देखे तो राज पुरुष मित्र की प्राप्ति होती है । सुवर्णादि द्रव्य की प्राप्ति अन्न, गुड़ भोज्य पदार्थ की प्राप्ति होती है । शान्त भाव से अग्नि कोण को देखे तो युवती या धातु का लाभ होता है । शान्त भाव से दक्षिण को देखें तो उदर कष्ट या भोज्य पदार्थ माधविक योग की प्राप्ति होती है । नेतृत्व देखें तो दूत के द्वारा शुभ समाचार तेल के पदार्थ की प्राप्ति होती है । वायव्य कोण को देखा करे तो मांस मदिरा आसत

धन्य समूहों के रत्नों की प्राप्ति होती है मारुत्यां दिशा में देखें तो शस्त्र हथियार फल भोजन की प्राप्ति होती है । उत्तर दिशा में देखें तो उत्तम भोजन घोड़ा और वस्तु की प्राप्ति होती है ईशान कोण को देखे तो घृत पूर्ण पदार्थ और बैल की प्राप्ति होती है । ये सब फल घर के मालिक को घर में बैठकर देखने से होता हैं ।

बसन्तलाल का मत है सूर्योदय में पूर्व दिशा में मधुर शब्द बोले तो श्रेष्ठ फल होता है शत्रुओं का नाश सोचे काम की प्राप्ति स्त्री रत्न का लाभ होता है कौवा प्रातः काल अग्निकोण में सुन्दर स्थान में बैठकर बोले तो शत्रुओं का नाश अभिष्ठ की सिद्धि की प्राप्ति होती है । प्रातः काल दक्षिण में बोलें तो अति दुःख की सूचना करते हैं । यदि कर्कश शब्द बोले तो रोग पीड़ा मौत सूचक जानना और मधुर शब्द बोले तो स्त्री की प्राप्ति होती है । नैऋत्य कोण में प्रातः काल कौवा बोले तो कष्ट नहीं होता दूत का आगमन होता है । प्रातःकाल पश्चिम में बोले तो निश्चय वर्षा होती है । स्त्री रत्न राज्य कर्मचारी का आगमन होता है अपनी स्त्री से कलह होता है वायव्य कोण में बोले तो वस्त्र का आगमन स्वजन का लाभ होता हे । परदेशी का आगमन ब्राह्मण वृत्ति का नाश परदेश की यात्रा होती है । उत्तर दिशा में बोलता हुआ प्रातः काल देख पड़े और कुछ खाता हुआ तो दुःखदायी, सर्प भयकारी दरिद्रता को करता है परन्तु नष्ट धन की प्राप्ति

करता है । ईशान कोण में यदि बोले तो व्यापारी अथवा अन्त्यज जातियों का आगमन होता है प्रिय वस्तु का लाभ और रोगों का नाश होता है ईशान पूर्व के मध्य में कौवा बैठे और मधुर स्वर से बोले तो अभीष्ट पदार्थ का आगमन हो निश्चय करके स्वामी की कृपा और धन का लाभ होता है ।

चक्रदिक्प्रकरण में सूर्योदयादि काल का फल लिखा है पहले पहर में पूर्व मुख कौवा शब्द बोले तो कार्य की सिद्धि और अभीष्ट की प्राप्ति होती है पहले प्रहर में अग्नि कोण में बोले तो स्त्री लाभ और वैरी का वध होता है प्रथम पहर में दक्षिण से बोले तो स्त्री लाभ, सुख प्रिय समागम होता है । नैरित्य में प्रियजन की स्त्री की, मिष्ट पदार्थ की चिन्तित कार्य की सिद्धि होती है पश्चिम में बोले तो बहुत बादल आवे और कम वृष्टि हो । वायव्य कोण में मिस्ठापन काक हो तो राजा की कृपा तथा यज्ञ का दर्शन होता है उत्तर में भयंकर बोले तो चोर भय और शोक की बात होती है अगर मधुर बोले तो ध न लाभ की बात सुन पड़ती है । ईशान कोण में बोले तो सगियों को त्रास, अग्नि का भय होता है इसी प्रकार पूर्व और ईशान के मध्य में बोले तो सुख और कामना की सिद्धि होती है । ये दिक्चक्र में पहले पहर का फल लिखा है ।

अब दूसरे पहर में कौवा बोले तो उसका फल कहते हैं दूसरे पहर में पूर्व में कौवा बोले तो कोई महान चिन्ता या शंका होती है । अग्नि कोण में बोले तो प्रिय बात की सुन

पड़ना तथा स्त्री की प्राप्ति नहीं होती है । दक्षिण में महान भय की बुद्धि प्रिय वैश्य का समागम होता है । नैऋत्य में प्राण भय स्त्री का तथा भक्ष्य भोज्य पदार्थ का तथा अच्छी वृष्टि होती है वायव्य कोण में दूसरे पहर में बोले तो मार्ग में चोरों का भय धनागम स्त्री तथा अन्नादि का लाभ होता है । उत्तर में बोले तो धनागम तथा विजय होती है वन में चोरों का भय होता है । ईशान कोण में बोले तो चोर अग्नि भय कारक वार्ता का फल होता है । ईशान पूर्व के मध्य में दूसरे पहर में बोले तो राजा की कृपा व अच्छे भोजन की प्राप्ति होती है और कठोर शब्द बोले तो चोर का भय होता है दिक्चक्र में दूसरे पहर का फल कहा है ।

तीसरे पहर पूर्व में बोले तो वृष्टि चोर भय जानना आनन्द राजा का आगमन सर्वत्र जय कार्य की सिद्धि होती है। अग्नि कोण में अग्नि का भय, लड़ाई का भय यात्रा निष्फल होती है, सौम्य बोली बोले तो यात्रा सफल होती है दक्षिण में रोग कारक प्राप्त वस्तु का आगमन होता है तथा छोटे-छोटे कार्य सिद्धि होते हैं । नैऋत्य कोण में जल का आगमन पिष्ठस्त का लाभ शत्रु नवे सूद्र का आगमन तथा यात्रा शुभ होती है अशुभ कार्य का नाश होता है । पश्चिम में नष्ट धन का लाभ दूत मित्र का आगमन अच्छी बात का सुन पड़ना ये सब मधुर बोली से कार्य की सिद्धि होती है ।

वायव्य कोण में वायु का चलना मेघों या होना चुराया

हुआ धन मिल जाना, संताप की बात सुन पड़ना यदि मधुर शब्द बोले तो स्त्री रूप धन की प्राप्ति होती है । उत्तर में बोले तो धन के लाभ राजा के सेवकों से धन का लाभ भोज्य पदार्थ अर्थ की सिद्धि शुभ बात और वैश्य का समागम होता है ईशान कोण में तिल चावल भोज्य पदार्थ पाने का लाभ होता है । ये सब फल तीसरे पहर में कौवा बोलने का होता है ।

चौथे पहर में कौवा बोले तो आधा लाभ, राजा प्रजा में भय की वृद्धि तथा रोग होता है । अगन कोण में भय की वृद्धि रोग और शिष्ट पुरुषों का आगमन होता है दक्षिण में च्रोर भय, शिष्ट का आगमन रोग मृत्यु सूचक होता है । नैऋत्य कोण में महान वृद्धि इष्ट की सिद्धि मार्ग में चोर से युद्ध होता है । पश्चिम दिशा में द्विजाति वाला कौआ बोले तो अर्थ का लाभ होता है । तथा स्त्री आगमन होता है जल की वृद्धि होती है। वायव्य कोण में बोले तो प्रिय नारी का आगमन निश्चय करके 7 दिन के भीतर, शिष्ट पुरुष का आगमन व गमन में लाभ होता है । उत्तर दिशा में पथिक का आगमन मानना वस्तु का लाभ, वैश्य का समागमन घोड़े की सवारी तथा रोग मृत्यु होती है । ईशान कोण मे बोले तो सुवर्ण की वार्ता रोग नाश होता है । ईशान पूर्व के मध्य में बोले तो इष्ट सिद्धि मध्यम होती है । ये सब फल चतुर्थ पहर में होता है ।

ये जो फल शकुन शास्त्र के जानने वालों ने कहा है

चारों प्रहरों में भी अगर कर्कश शब्द होती अशुभ और मधुर शब्द हो तो शुभ जानना चाहिये ये शान्त भाव से बोलें तो शुभ और रौद्र भाव से अशुभ बोले तो शुभ फल जानना चाहिए। शान्त भाव से दिशाओं की देखता हुआ बोले तो अशुभ फल होता है।

पाराशर का मत है घर से पूरब में कौवा फल युक्त वृक्ष में घोंसला बनावे तो क्षत्रियों की जीत होती है और सुष्क विपरीत वृक्ष में पराजय होती है। इसी प्रकार वैश्य शूद्र ब्राह्मणों को उनकी स्त्रियों को कम से कम शुभ अशुभ फल होता है।

वाराह संहिता में लिखा है वैशाख मास में सुन्दर वृक्ष में घोंसला शुभ फल कारक होता है और निन्दित सूखे काँटेदार वृक्ष में घोंसला अशुभ फल कारक होता है वृक्ष की पूरक शाखा में घोंसला हो तो शरद वृक्ष होती है दक्षिण के तरफ घोंसला हो तो घोंसला के ऊपर अधिक बृष्टि होती है।

बड़ी मात्रा में वैशाख में घोंसला पेड़ में उत्तम होता है और बिल में हो तो देश का नाश होता है। और चैत में अन्न के घर में नाश कारक होता है।

बसन्त राज में लिखा है वैशाख में उस वृक्ष में घोंसला शुभ फल कारक होता है कि निन्दित सूखे काँट युक्त वृक्ष में दुर्भिक्ष का भय होता है। जो प्रहस्त में पूर्व की शाखा में घोंसला बनावे तो वर्षा अच्छी कुशल आनन्द, आरोग्यता और

राजा की विजय होती है । अग्नि में घोंसला हो तो थोड़ी वर्षा, अग्नि भय लड़ाई होती है । दुर्भिक्ष, शत्रुओं से देश की पीड़ा पशुओं में रोग होता है । दक्षिण शाखा बनावे तो थोड़ी जल वर्षा होती है । व्याधि, भय, मरण शाक अन्न का क्षय और विरोध होता है । नैऋत्य मे बनावे तो वर्षा बाद में होती है । मनुष्यों को पीड़ा, चोर नीति का प्रचार दुर्भिक्ष और युद्ध अवश्य होता है । पश्चिम शाखा में बनावे तो वर्षा होती है, आरोग्यता क्षेम सुभिक्ष और आनन्द होता है । वायव्य में बनावे तो मेघ कम बरसते हैं । मूस टिंडी का भय, अन्न का नाश, शत्रुओं से हानि होती है । उत्तम शाखा में बनावे तो वर्षा अच्छी होती है । ईशानकोण में बनावे तो थोड़ी वृष्टि प्रजाओं को पीड़ा, बान्धवों में कलह मर्यादा का उल्लंघन होता है । फुनगी पर बनावे तो अधिक वर्षा, अति नीचे अल्पवर्षा होती है ।

सर्व शकुन में पाराशर का वचन है बहुमत से पूरब में घोंसला क्षेम सुभिक्ष कारक हैं । अग्निकोण में थोड़ी वृष्टि । दक्षिण में व्याधिकार तथा योग क्षेम कारक होता है । पश्चिम में अवर्षय कारक हैं वायव्य में कालोपद्रव, अति वर्षा होती है । उत्तम अन्न कठोर विपरीत फल होता हे पूर्वोत्तर में क्षीरयुक्त वृक्ष में निवास करे तो कल्याण कारक होता है ।

वाराह संहिता में लिखा है कि सरकिडा, कुशा नाठी लतर का घोंसला बनावे तो देश सूना हो जाता है । अनावृष्टि

राग का भय हाता है ।

बसन्तराज का मत है कि कौवा पड़ की खांदर म अथवा बिल मं लता इत्यादि स घांसला बनाव ता राग का भय वर्षा का भय हाता है और वा दश सूना हा जाता है, वर्षा का अनुभव राग भय और शत्रु की वृद्धि हाती है और सूख पड़ मं पत्तां और लता इत्यादि स घांसला बनाव ता शत्रु का भय हाता है ।

पाराशर का मत है कि घर अटारी और घर के ऊंचे स्थान में घोंसला बनावे तो घर के स्वामी का नाश होता है वृक्ष के खोंटर में बनावे तो वर्षा होती है ।

विष्णुधर्मोत्तर में लिखा है कि कौवा घोंसला में 1 अन्डा दे अथवा अन्डा न दे तो देश के नाश का फल होता है ।

बराह का मत है कि अन्डे का न होना या 1 अन्डे का होना शुभ नहीं है । बहुत से अन्डे हों और उनमें से 1 बचे तो शुभ फल होता है । अन्डे का होना शुभ नहीं है ।

तथा बसन्तराज : 1. अन्डा अगिन संज्ञक 2. अन्डा वायु संज्ञक 3. अन्डा केन्द्र संज्ञक, अन्डा काक संज्ञक होते हैं । 4. पश्चिम की तरफ हों तो पृथ्वी आनन्द और अन्न से पूर्ण होती है । अन्डा न होने से अवर्षण का योग होता हे । बोया हुआ अन्न नहीं उपजता । अन्डा होने से अन्न की उत्पत्ति अच्छी होती है । कीड़ा तोता मूंसा भी उसे खाते हैं ।

पृथ्वी क्षेम, कुशल सुभिक्ष से पूर्ण होती हे । 3. अन्डा होने से मनोकामना पूण्र होती है ।

पाराशर का कहना है 3-2-4 अन्डा होना क्षेम होता है ।

वराह संहिता में लिखा है 2-3-4 अन्डे सुभिक्ष कारक हैं 5 अन्डों का होना राजा की मौत का सूचक होता है । तीसरे अन्डे का बच्चा सुभिक्षकारक होता है परन्तु दो माता के अन्डे न हों एक ही फल बीच है ।

बड़ी यात्रा में वराह का मत है यात्रा के समय 2-3-4 कौवे के बच्चे बोले तो यात्रा शुभ होती है । 2 कौवे का बोलना शुभ नहीं होता, अंडा और फटे नहीं तो दुर्भिक्ष फल होता है अथवा फूटने पर बच्चे विकल हों तो दुर्भिक्ष मृत्यु सूचक होते हैं ।

वाराह संहिता का मत है चोरवर्ण भय व श्वेत वर्ण अग्नि भय कारक होते हैं । कौवे के बच्चों का विकल होना दुर्भिक्ष सूचक है ये सब कौवा के उत्पात का जो दोष है अथवा इसी प्रकार के मृग और पक्षियों का भी शकुन शास्त्र का विचार कहा है इन अशुभ से फल के निवृत के वास्ते शान्ति यज्ञ करना चाहिये ।

पाराशर का मत है कि बिल्कुल सफेद मुद्री कौवा की सब लोगों के देखने से कोई विशेष नहीं होता ।

मत्स्य पुराण में लिखा है कि सफेद कौवा मैथुन करता

देख पड़े तो उस मनुष्य को फांसी द्वारा मृत्यु होती है । अथवा जिस देश में वह रहता हे उस देश का नाश होता है ।

बसन्तराज में कहा है कि ऐसा कौवों का उत्पात पृथ्वी पर महा भय कारक होता है ऐसा शकुन शास्त्र के ज्ञाताओं ने कहा है अथवा जोड़ा खाता हुआ सफेद कौवा देख पड़े तो घबड़ाहट, कर भय विदेश की यात्रा बन्धुओं का क्षय व्याधि और धन का हरण होता है । अद्‌भुत कौवा के देख पड़ने से बुद्धि का क्षय और व्याकुलता होती है । ये जो अशुभ दोष हैं इसके शान्ति के लिए उसी समय स्नान कर डालना चाहिए तथा अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मण को भोजन, वस्त्र दक्षिणा देना चाहिए । ऐसा करने से मैथुन दर्शन दोष दूर हो जाता है । अगर ऐसा करे तो जमीन में सोवे । उस दिन भोजन न करे सबेरे उठकर स्नान करें और शान्ति करें गुरुजनों को दान दें । अगर स्त्री को ऐसा संग देख पड़े तो उसको 7 दिन हविष्यान्न भोजन कर काक स्पर्श शान्ति करनी चाहिए । काक बलि देनी चाहिए । जिस देश में यह सब अद्‌भुत देख पड़े तो उसकी शांति अवश्य करनी चाहिए नहीं तो अतिवृष्टि दुर्भिक्ष आधि व्याधि चोर अग्नि शत्रु का भय और धर्म का नाश होता है । ये जो दोष है उसकी शान्ति राजा को करनी चाहिए । अन्न दान गौदान, पृथ्वी का दान धन दान करना चाहिये नहीं तो साल के भीतर युद्ध होता है ।

इति वृहद् कौआ तन्त्रम्

काक चरित्रम्

एक समय नागराज के कौवे से बोलने से शुभाशुभ फल जानने की इच्छा से अर्जुन से पूछने पर उन्होंने बताया कि काक की बोली के शुभाशुभ का निर्णय दिन की घड़ी प्रमाण एवं बोली व दिशा के अनुसार करनी चाहिये मुनियों के कथनानुसार उसका विस्तार पूर्वक वर्णन इस प्रकार है।

(प्रात:काल कारन वचन)

यदि प्रात:काल से एक घड़ी के अन्दर में कौवा 'अय अय' शब्द करे तो वह दिन अवव्य ही सुन्दर और प्रसन्नता का होगा।

(द्वितीय दण्ड फलम्)

यदि अग्नि कोण में हो घड़ी दिन चढ़ने के समय कौवा 'अब अब' शब्द करे तो दुंख की सम्भावना हो किन्तु यदि उसका मुख ऊपर की ओर हो तो शोक की सूचना दूर से आवे और यदि नीचे को मुख करके बोले तो पुत्र शोक हो।

तृतीय दण्ड फलम्

यदि सबेरे तीन घड़ी दिन चढ़ने के समय कौवा दक्षिण दिशा में मुयमु की बोली बोले तो जिसके घर में बोले उसे अकस्मात धन का लाभ हो।

चतुर्थ दण्ड फलम्

यदि प्रात: चार घड़ी के अन्तर्गत कौवा नैऋत्य कोण में मुय मुय शब्द करे तो चोर या अग्नि का भय हो यदि मुँह

ऊँचे करके बोले तो राज भस्म हो और यदि नीचे मुख करके बोले तो अतस्य भव हो ।

पंचम दण्ड फलम्

यदि पांच घड़ी दिन चढ़े कौवा अहा अहा का स्वर पश्चिम दिशा मे बोले तो वृत्ति लाभ हो यदि ऊंचे मुख करके बोले तो विदेश से और नीचे मुख करके बोले तो कही-कहीं धन का लाभ हो ।

षष्ट दण्ड फलम्

यदि छै घड़ी दिन चढ़ने पर कौवा पश्चिम दिशा में कहा-कहा, शब्द करे तो मन की अभिलाषा पूरी हो ।

सप्तम् दण्ड फलम्

यदि सात घड़ी दिन चढ़ कौवा आहे-आहे शब्द वायु कोण में बोले तो लोगों की मृत्यु हो और यदि उत्तर की ओर 'जा जा' शब्द करे तो अन्य बात समझनी चाहिए ।

अष्टम् दण्ड फलम्

यदि आठ घड़ी में ईशान कोण में कौवा हा-हा की बोली बोले तो मरन कीस सूचना मिले ।

नवम् दण्ड फलम्

यदि नवी घड़ी में कौवा सर के ऊपर 'हा-हा' की बोली बोले तो कोई विनीत मित्र आवे ।

दशम् दण फलम्

यदि दिन की दशवीं घड़ी में कौवा सामने 'आवा-आवा' बोले तो शुभ सूचना मिले।

एकदश दण्ड फलम्

यदि ग्यारहवीं घड़ी में कौवा अग्नि कोण में 'भज-भज' शब्द बोले तो पुत्र हो ।

द्वादश दण्ड फलम्

यदि दिन बारही घड़ी से वायु कोण में कौवा 'जय-जय' की बोली बोले तो दुःख एवं शोक प्रद सूचना मिले ।

त्रयोदश दण्ड फलम्

यदि दिन की तेरहवी घड़ी में नैऋत्य कोण में कौवा 'का-का' की बोली बोले तो परम दुःख हो ।

चतुर्दश दण्ड फलम्

यदि चौदहवी घड़ी में उत्तर दिशा में कौवा 'को-को' की बोली बोले तो शत्रु भय हो ।

पंचदशी दण्ड फलम्

यदि पन्द्रहवी घड़ी में ईशान कोण में कौवा 'जा-जा' बोले तो महान दुख हो ।

षोडष दण्ड फलम्

यदि सोलहवीं घड़ी में पूर्व दिशा में कौवा 'आप-आप' की बोली बोले तो मित्र से भेंट हो ।

सप्तदश दण्ड फलम्

यदि सतरहवी घड़ी में दक्षिण में कौवा 'आप-आप' की बोली बोले तो महान दुःख हो ।

अष्टादश दण्ड फलम्

यदि अठारहवी घड़ी में वायु कोण नें कौवा 'खावा-खावा' बोली बोले तो कार्य लाभ हो ।

उन्नविंशति दण्ड फलम्

यदि उन्नीसवी घड़ी में पूर्व में कौवा 'महा-महा' की बोली बोले तो विदेश यात्रा हो ।

विंशति दण्ड फलम्

यदि बीसवी घड़ी में उत्तर में कौवा 'अय-अय' बोले तो धन का लाभ हो ।

एकौविशंति दण्ड फलम्

यदि इक्कीसवी घड़ी में सिर के ऊपर कौवा सा-सा की बोली बोले तो भूमि लाभ हो ।

द्वादविंशति दण्ड फलम्

यदि बाईसवी घड़ी में पूर्व में कौवा आका-आका बोले तो अपूर्व लाभ हो ।

त्रयोविंशति दण्ड फलम्

यदि तेईसवी घड़ी में कौवा अगन कोण में अद्वैय अद्वैय शब्द करे तो उसे या उसके स्वामी को आवश्यक शीघ्र ही सम्पत्ति लाभ हो ।

चतुर्विंशति दण्ड फलम्

यदि चौबीसवी घड़ी में दक्षिण दिशा में कौवा 'आवा-आव' की बोली बोले तो अकाल पड़ने की सम्भावना समझो ।

पञ्चविंशति दण्ड फलम्

यदि पच्चीसवी घड़ी में नैऋत्य कोण में कौवा खाये-खाये की बोली बोले तो सर्प भय हो ।

षडविंशति दण्ड फलम्

यदि छब्बीसवीं घड़ी में पश्चिम दिशा में कौवा आहा-आहा बोले तो सर्वत्र लाभ हो ।

सप्तविंशति दण्ड फलम्

यदि सत्ताईसवीं घड़ी में उत्तर दिशा में (आका-आका) बोले तो गृहस्वामी को अतुल लाभ हो ।

अष्टाविंशतिं दण्ड फलम्

यदि अट्ठाईसवीं घड़ी में ईशान कोण में कौवा (सा-सा) बोले तो मनोकामना पूर्ण हो ।

नवांविंशति दण्ड फलम्

यदि उन्तीसवीं घड़ी में कौवा सिरके ऊपर (आखा-आखा) बोले तो सुख हो ।

❐

कौवा-तंत्र

पहला अध्याय

कौआ एक ऐसा पक्षी है जो भारतवर्ष के हर ग्राम में पाया जाता है। कौए के विषय में हमारे पुराणों और कथाओं में अनेक रोचक विवरण बहुत से स्थानों पर पढ़ने को मिलते हैं। अनेकों किवदन्तियाँ हैं कि कौए में अनेकों चमत्कारिक शक्तियाँ होती हैं और कौए के माध्यम से साधक अनेकों सिद्धियाँ प्राप्त कर सकता है। अनेकों रोगों में भी इसके द्वारा फायदा होता है। हमने इस ग्रन्थ में यथासाध्य प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थें से संग्रहीत कर विवरण दिया हैं। फिर भी नये साधक को बिना किसी जानकार साधक के प्रयोगें को बहुत सावधानी पूर्वक ही करना चाहिए अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है।

प्रथम खण्ड

कौवा द्वारा चमत्कारिक प्रयोग

पंख के प्रयोग

१-पारे की भस्म (कलई) बनाना

विधि-जितने पारे की कलई बनाना हो उसे किसी अल्मोनियम के पात्र में डाल दें और फिर उसमें थोड़ा सा

पानी डालकर कौवे के पंखों को गोल गुच्छा सा बनाकर उसी पात्र में डालकर उस पारा पड़े हुए पात्र को 15-20 मिनट तक खूब हिलावें। जब पारे का रंग मटमैला हो जाय तब उसे रात भर के लिए बाँधकर टांग दें सुबह आप उसे खोलकर देखेंगे तो उस पारे के बारीक-बारीक जर्रे पायेंगे। इसे यदि आप किसी सुनार को दिखावे तो वह बहुत खुश होगा, बाकी यह वह जाने कि इस कलई का प्रयोग भी हो सकेगा या नहीं।

२-वर्षा बन्द हो जावे

विधि-जब कभी अति वृष्टि से जन-धन हानि होने लगे तो उसे बन्द करना आवश्यक होता है। अस्तु रोकने का उपाय यह है कि किसी वृहस्पतिवार की आधी रात में जाकर किसी घोंसलें से एक कौआ को पकड़ लांवे और दूसरे दिन से भुने हुए चने को भेड के रक्त में भिगोकर साये में सुखाकर पीसकर बनाये हुए आटे की नित्य तीन दिन तक खिलावें और उसे पीने के लिए जो पानी दे इसमें एक दो बूंद भेड़ का रक्त अवश्य डाल दें। चौथे दिन उस कौवे के 4-6 पंख उखाड़ कर छोड़ दें। उसके बाद किसी अंधेरी रात में आधी रात के समय मिट्टी के कोरे मटके में गूलर की लकड़ी के लाल-लाल अंगारों को छोड़ दें और उस पर लोहवान, हरताल, गूगुल डाल दें साथ ही दूसरे मटके से उन पंखों को रखकर उस लोटे को धुंए वाले लोटे पर उलट कर

रख दें । जिससे वह सारा धुंआ उन पंखों में भली-भाँति लग जावे । एक घण्टे बाद उस लोटे को उतार दें और पंखों को निकालकर अपने पास रख छोड़ें और आवश्यकताा के अनुसार उसमें चार पंख लेकर लाल रंग के कपड़े में लपेटकर एक-एक पंख चारों दिशाओं पूरब, पश्चिम, उत्तर और दक्षिन में 1।। फुट की गहराई में जमीन में गाढ़ दें । बस आपके पंख गाढ़ने के चार घण्टे बाद ही वर्षा बन्द हो जायेगी ।

३-लाटरी या पहेलियां जीतने के लिए

विधि-कौवे के अपने आप गिरे हुए काले पंख को आप मंगल के दिन ढूढ़कर उठा लावें और उस पर केशर छिड़क कर पूजन करके उसकी कलम बनाकर यदि आप पहेलियाँ भरे तो निश्चय ही आपको सफलता मिलेगी चाहे पहला इनाम न मिले पर मिलेगा अवश्य ।

चोंच, सिर तथा जवान का प्रयोग

४-गढ़ा धन प्राप्त हो

विधि-यदि किसी को यह सन्देह हो कि उसके घर में कहीं धन गढा है तो उसे चाहिए कि यदि धन गाढ़ने वाला, आदमी हो तो नर कौवा और यदि वह स्त्री हो तो मादा कौवा को पकड़ें और घर लाकर पिंजड़े में बन्द करें । तीन दिन तक नित्य उसे साधारण आहार के अतिरिक्त शुद्ध शहद में गेहूं की रोटी डुबाकर दिन में एक बार अवश्य खिलावे । चौथे

दिन उसे मारकर उसका सर काटकर किसी लकड़ी की डिबिया में बन्द करके साये में सूखने को रख दें । 40 दिन के बाद उसे खोलकर रखें परन्तु उस दिन शुक्रवार ही होना चाहिए अब आप उस डिबिया को खोलकर एक घन्टे के लिए खूब तेज चमचमाती धूप में रख दें । बाद को उसमें 10 बूंद गुलाब जल और एक माशा खालिश मधु डालकर उस डिबिया को बन्द करके पुनः रख दें बस फिर अमावस्या की आधी रात को जहां पर आप सोते हों उसके सिरहाने की ओर एक फुट जमीन के नीचे खोदकर गाढ़ दें और उस गड्ढे को मिट्टी से बन्द कर दें । तथा आप नित्य ही उस जगह चारपाई पर सोयें । चालीस दिन के अन्दर निश्चय ही वह व्यक्ति आकर स्वप्न में आपको वह स्थान बता देगा या दिखा देगा ।

५-भूमिगत धन दिखे

विधि-यदि कौवे की जवान हुदहुद-पक्षी का हृदय साये में सुखाकर पीसकर शहद में सानकर अन्जन बनावें और उस अन्जन को आँखों में लगावे तो भूमि में गढ़ा हुआ धन दीखे ऐसा कहा जाता है ।

६-जमीन में गढ़ा धन दिखाई पड़े

विधि-काले कौवे की जवान को तेल में जलाकर उसका अंजन उस आदमी की आँखों में लगावे जो उल्टा पैदा हुआ हो, तो उसे जमीन में गढ़ा हुआ धन दिखाई पड़ेगा ।

७-प्यास न लगे

विधि-यदि कौए के हृदय को रविवार पुष्य नक्षत्र में लेकर ताबीज में मढ़वा कर अपने पास रक्खे तो प्यास न लगे।

८-प्यास बिल्कुल न लगे (यन्त्र)

एक जगह लिखा है कि संक्रान्ति के दिन शाम को चार बजे के लगभग। छटाँक खाँड कोवे को खिलावे और स्वयं खाकर शाम को बाहर जंगल की ओर जावे और मादा कौवी को पकड़कर लावे यदि उस दिन दुर्भाग्य से न मिले तो दूसरी संक्रान्ति को इसी विधि से जाकर पकड़ लावे घर लाकर उसे पिंजरे में रक्खें खाने में उसे चाहे जो कुछ दें पर पीने के लिए जो पानी दें उसमें एक सेर शीशम की पत्तियों का अर्क जो आधा पाव होगा एक बोतल में डाले और उसमें आधा पाव केवड़ा जल, आधा पाव गुलाब जल और आधा पाव अर्क वेद मुश्क डालकर बोतल को खूब हिलायें और यही पानी उसे पीने को दें। इसी क्रम से उसे एक मास तक अपने यहाँ खिलाता पिलाता रहे, दूसरी संक्रान्ति की रात को उसी कौवी को लेकर किसी बड़े जलाशय तालाब या नदी पर जावे और उसकी गर्दन पकड़कर उसे पानी में दो चार डुबकियां देकर मार डाले। बाद को उसकी चोंच का ऊपरी भाग एक रत्ती काट के और उसकी चोटी के बाल भी एक रत्ती काट लें और

उसके मुंह की सारी की सारी जवान निकाल लें और इन तीनों वस्तुओं को, किसी सफेद कागज को केशर के रंग में रंगकर उसी में रखकर पुड़िया बनाले और उस पुड़िया को किसी हरे रंग के नये रेशमी कपड़े से लपेट कर उसी के हरे धागे से ही बाँध दें और उसी रेशमी हरे धागे में उसे यन्त्र की भांति गले में पहने, परन्तु यह पहनने वाले के हृदय के बीच में ही लटकते रहना चाहिए । बस इस यन्त्र को धारण करके चाहे जिस रेगिस्तान की यात्रा करें और बेधड़क रहें निश्चय ही आपको प्यास की अनुभूति नहीं होगी ।

९-वाक् सिद्धि प्राप्त हो

विधि-किसी पूर्णिमा की रात को 12 बजे किसी कौए को चुपके से घोंसले से पकड़ लावे और पेड़ से नीचे उतरने पर उसे दाहिने हाथ से पकड़ कर सीने से चिपका कर अपने घर ले आये और पिंजड़े में बन्द करलें और सुबह-शाम चार बजे जागकर उसके सामने बैठ जावें ज्योंहि सुबह होने — और पौ फटे और कौवा बोले अर्थात् उसके पहली बार हाँ काँव करने के बाद ही उसे तुरन्त मार डाले और बड़ी सतर्कता से उसके मुँह से उसकी पूरी जवान बिना किसी प्रकार से छिदे कटे या खरौंच लगे ही निकाल लें फिर उस जवान को साये में सुखाकर खरल में डालकर उसमें दो तोले केवड़ा जल एक मासा अनविध मोती एक मासा गोरोचन औ

एक तोला मेंहदी डालकर खूब खरल करें । जब उसकी बहुत बारीक लुगदी तैयार हो जाय तब इसमें दो बूंद खालिश शहद डालकर गोली सी बनाले और उसे सोने के ताबीज में रखकर टांका सुनार से लगवाले और इसे हरे रंग के रेशमी धागें में पिरोकर पहने और गले में इस प्रकार से लटकावें कि वह नंगे बदन की छातियों के बीच छूता रहे और बाहर से दिखे नहीं बस उसको पहिनकर ईश्वर स्मरण करके आप जो कुछ भी कहेंगे सो वह बिलकुल सत्य व सही होगा इसको देखकर लोग आश्चर्य करेंगे और आपको सिद्ध महात्मा समझेंगे ।

10-मनुष्य कौवे के समान बोले

विधि-दशमी की आधी रात को किसी पुराने कब्रस्तान में जाकर किसी कब्र से मनुष्य की खोपड़ी की एक हड्डी ले आवे और उसे खरल में रखकर उसमें चार माशा कपूर दस तोला अर्क केवड़ा और तीन माशा उम्दा केशर मिलाकर घोटें कि सभी वस्तुएं एक रस मिलकर सूख जायें बस इसकी बुकनी को सुरक्षित रखकर किसी नौचन्दी जुमेरात को जाकर किसी ऐसे कौवे को पकड़ लावे जो गूलर के पेड़ के घोंसले में रहता हो इसको घर लाकर 21 दिन तक अपने यहाँ रक्खें और उसे साधारण दाना पानी के साथ दिन के तीसरे पहर चावलों की पिसी आटे की लेई में मीठा और बुकनी 4 रत्ती के करीब मिलाकर नित्य खिलावें फिर साधारण दाना पानी

अगली पूर्णमासी तक खिलाता रहे पूर्णमासी की आधी रात को उस कौए को ले जाकर उसके घोंसले के उत्तर बीस-पच्चीस क़दम के फासले से उड़ा दें वह अपने घोंसले में चला जायेगा। अब तीन दिन बाद उसके घोंसले से दुबारा पकड़ लें और दस बजे रात को उसी कब्रिस्तान में जहाँ से वह हड्डी ली थी वहीं ले जाकर मार डालें और उसका भेजा व जवान निकाल कर अपने साथ घर लावे और शेष को वहीं गाढ़ दें। इन दोनों वस्तुओं को अपने घर लाकर उसमें दो तोला सिंगरफ मिलाकर तीन दिन तक मुतबातिर जंगली धतूरे के रस में खरल करें जब यह सब चीज एक समान हो जाय तो इसका एक गोला बनालें और इस पर कुछ काली मिर्च और थोड़ा कपूर चिपका कर काले धागे से लपेट दें । जिससे कि वह गोला बिल्कुल छिप जाय बस आपका काम हो गया । प्रयोग के समय जिस व्यक्ति को कौवे के समान बुलवाना हो उसे पहले थोड़ी भांग खिला दे और उससे कौवे के सम्बन्ध की बात करता रहे । जब वह सो जाय तो उसके सीने पर उसी गेंद को रख दें । बस उस व्यक्ति पर कौवा छा जायेगा और वह बड़बड़ाना प्रारम्भ कर देगा और स्वयं कहेगा कि मैं कौवा हूँ मेरा रंग काला है मैं उड़ रहा हूँ यदि और थोड़ी देर के बाद वह कौवे के समान ही बोलना प्रारम्भ कर देगा जिससे उसके चारों ओर अन्य कौवे एकत्रित हो जायेंगे और उसकी बोली सुनकर कौवे भी खूब बोलेंगे । उन कौवों के प्रत्युत्तर में वह

तब तक बोलता रहेगा जब तक कि थक न जायेगा । थकने पर वह चुप हो जायेगा । अब आप उस गेंद को उठालें और पानी के छींटे से उसे जगा दें । बड़ा सुन्दर और दिलचस्प मजाकर रहेगा अब आप गोले को रखलें और दुबारा काम में लावें जब तक यह आपके पास रहेगा काम करता रहेगा ।

11-वर्षा पर नियन्त्रण

विधि-शनिवार के दिन सूर्य अस्त होते-होते अर्थात् सन्ध्या काल में ही एक घन्टे के भीतर किसी जंगल में वृक्ष पर एक मादा कौवे का घोंसला ढूढ़े यदि न मिले तो इसी समय में दूसरे शनिवार को ढूढ़े जब कोई घोंसला मिल जाये तो अगली जुमेरात को सन्ध्या के समय में ही उसे पकड़ लावे और किसी जलाशय पर ले जाकर पहले स्वयं नंगे होकर नहावे और फिर उस कौवी को नहला कर उसी जलाशय से एक घड़ा पानी लेकर घर आवे और उस कौवी को पिंजड़े में बन्द कर दें । पांच दिन तक उसे सूर्य निकलने के पहले ही उसी घड़े के जल से उस कौवी को नित्य नहलावे और दिन में एक बार गेहूँ की रोटी खिलाने के बाद उसे और चाहे जो खाने को दें पांचवे दिन आधी रात को इस कौवी को मारकर उसका अस्थि पंजर जिसमें यकृत और हृदय लगा रहे उसे छोड़कर शेष भाग को जमीन में गाढ़ दे इस अस्थि पंजर को साये में सुखाकर किसी टीन के डिब्बे में रख लें जब आपको चमत्कार दिखाना हो चुपके से तमाशा दिखाने के स्थान पर

जमीन खोदकर 6 इंच की गहराई में इस डिब्बे को गाढ़ दें और इसके एक घन्टे बाद उस स्थान पर यानी डिब्बे के बीचों बीच सर गुलर की लकड़ी के कोयले की तेज आंच दें बस वह डिब्बा ज्योंहि गरम होगा वर्षा होने लगेगी और जब तक गरम रहेगा अर्थात् कोयले सुलगते रहेंगे तब तक पानी बरसता रहेगा । आग बुझ जाने पर पानी बरसना भी बन्द हो जायेगा। यह वर्षा उस स्थान के एक हजार गज की परिधि के बाहर न होगी । आपके इस चमत्कार को देखकर निश्चय ही लोगों का सर आपके प्रति श्रद्धा से झुक जायेगा ।

12-चोर चोरी न कर सके

विधि-एक स्थान पर लिखा है कि यदि पूर्णिमा की रात को घर से पूरब दिशा में जाकर किसी पेड़ से एक कौवा पकड़ लावे और उसे लेकर जब पेड़ से उतरे तो 3 चक्कर पेड़ के दाहिनी और से बांये ओर को लगावे कौआ को लेकर किसी बाँस की तीलियों से बने हुए पिंजरे में रख छोड़ें और पिंजड़े को लाल कपड़े से ढक दें एक सप्ताह तक गेहूँ के आटे व चीनी से बनाया हुआ हलुआ जिस पर लाल रंग बुरक दिया हो नित्य दिन में एक बार अवश्य खिलावे और साधारण दाना पानी देता रहे । रात में उस पिंजरे को उसी लाल कपड़े से अवश्य ढक दिया करें । आठवें दिन रात के दस बजे उसे मारकर उसका सारा रक्त व हृदय निकाल कर रखलें शेष भाग को बस्ती के बाहर गाढ़ दें । अब आप इन दोनों वस्तुओं को

साये में सुखाकर भली भाँति खरल में पीसे फिर उसमें रूह केवड़ा 1 तोला डालकर घोटें अगले रविवार को किसी कुत्ते के मुँह से सामने के दाँत निकाल लें और उसे भी उन सबके साथ खरल करले परन्तु इससे वह दाँत पिसेगा नहीं अस्तु उस समूचे दाँत को या उसके टुकड़े हों उनको बीच में रखकर उसके चारों और वही लुगदी लपेटकर गोली बनालें और इसके ऊपर लाल कपड़ा लपेट कर काले धागे से सींकर ठीक करलें और किसी डिबिया में रखलें । बस डिबिया को घर में चौखट के नीचे गाढ़ें या किसी बाग व खेत के बीच में गाढ़ दें और विश्वास रक्खें कि जब तक वह डिबिया वहाँ गढ़ी रहेगी तब तक उस स्थान में चोरी न हो सकेगी ।

हृदय के प्रयोग

13-भूत प्रेत दूर हो

विधि-एकादशी के दिन किसी श्मशान या कब्रिस्तान से किसी शव के सर, बाँह, टांग और छाती की हड्डियों के चार छोटे-छोटे टुकड़े ले आवे फिर शाम को या सुबह को यानी जिस समय या तो सूर्य अस्त हो रहा हो या सूर्य निकल रहा हो तब इन हड्डियों को एक कुश के आसन पर रखकर किसी लाल कपड़े पर रक्खें और कपूर अगर व धूप सुलगा कर कमरे को बन्द कर दें और एक घन्टे के बाद जाकर उस लाल कपड़े को गाँठ लगाकर बाँध दें और सुरक्षित रखलें ।

अब आप नवमी की रात में जाकर नंगे होकर किसी

पड़ोस के वृक्ष पर घोंसले से एक कौवा पकड़ लावें और पेड़ से नीचे उतार कर आप उस कौवे का किसी लाल कपड़े के झोले में डालकर अपने कपड़े पहिन कर बांये हाथ में उस झोले को लटका कर घर आवे । वहां कौवे को तांवे के तारों से बने हुए पिंजड़े से बन्द करें और उसके सामने वही लाल कपड़े में बंधी हुई हड्डी की पोटली को डाल दें और पिंजड़े को लाल कपड़े से ढक दें । दूसरे दिन प्रातः उस पोटली को निकालकर किसी बक्स में रखकर अंधेरे में रख दें और पिंजड़े को रोशनी में रख दें साधारण दाना पानी दें । शाम को एक लोहे के बर्तन में कच्चा दूध 2 तोला एक माशा गुलाब जल एक रत्ती केशर और एक माशा लौवान मिलाकर उसे पोटली के साथ-साथ पिंजड़े में रख दें और दूसर मिट्टी के प्याले में चन्दन, बुरादा, वरमल और धूप रखकर ऊपर से आग के अंगारे रखकर उसे भी पिंजड़े में रख दें जिससे कि उसका धुआँ गड्ढे में भर जाय और दही जम जाये । थोड़ी देर के बाद कौवा उस दही को बड़े चाव से खा लेगा इसी क्रम से आप नित्य नौ दिन तक करें । रात में वह पोटली दही के साथ रक्खें सुबह प्रकाश फैलने से पहले ही निकालकर अंधेरे कमरे में लोहे के बक्स में बन्द कर दें दसवें दिन सुबह वह पोटली उसी प्रकार से बन्द करके आप दिन में किसी समय उस कौवे को उसी लाल झोले में रखकर उसी स्थान पर ले आये जहां इसे पकड़ा था । वहां उसको मारकर उसका

हृदय निकाल लें और शेष भाग को जमीन में गाढ़कर उस हृदय को उसी झोले में डालकर घर आवे और घर में उसी पोटली के साथ उसी बक्स में बन्द कर दें ।

अगली नौचन्दी जुमेरात को इन दोनों वस्तुओं को खरल में रखकर एक पाव केवड़ा जल डालकर भली भांति घोटें जब इसकी लुगदी बन जाये तो इसके तीन गोले बनायें और हरेक गोले में एक माशा कपूर एक माशा केशर एक माशा कस्तूरी और एक माशा लोवान मिलाकर लाल कपड़े में लपेट कर लाल धागे से ही बांध दें या सिलाई कर दें फिर इस गोले को तांवे के तावीज में मढ़वा लें ।

इस यन्त्र को गले में पहनने से हर प्रकार की बाधा दूर हो जायेगी । घर में चौखट के नीचे गाढ़ देने से उस घर में कोई हानि या बाधा तो क्या आग भी नहीं लग सकती खेत या बाग में गाढ़ देने से उसकी निश्चय ही पूर्ण रक्षा रहेगी ।

14-भविष्य वाणी करना

विधि-चांद की पहली तारीख को आधी रात को किसी कब्रिस्तान से किसी शव के सिर की हड्डी का टुकड़ा अपनी दाहिनी जेब में रखकर ले जावे और घर में लाकर सिंदूर लगाकर किसी लोहे या टीन के डिब्बे में रख दें और उसी डिब्बे में थोड़ा कपूर व केशर डाल दें । और अंधेरे में रख दें । तीन दिन तक उसी इसी तरह रहने दें पर आधी रात

को नित्य उस डिब्बे को खोलकर उसमें धूप की धूनी देते रहें। तीन दिन के बाद पानी चाँद की चौथी रात की शाम को उसी हड्डी के टुकड़े को दाहिनी जेब में रखकर आप बस्ती के बाहर से कोई कौवा पकड़ लावे और घर में किसी पिंजड़े में बन्द करके काले कपड़े से ढक दें और हड्डी पुनः उसी डिब्बे में रखकर यथास्थान रखदें सुबह काला कपड़ा पिंजड़े से हटाकर दाना पानी दें दोपहर को गाय का मक्खन खिलायें। इस क्रम से 11 दिन पूरे करके बारहवें दिन रात के दस बजे के करीब इस डिबिया को या हड्डी को दाहिनी जेब में डालकर कौवे को लेकर उसी कब्रिस्तान में जायें जहां से वह हड्डी लाये थे । वहां उस कौवे को उस हड्डी की डिबिया के ऊपर ही मार डाले और उसकी पीठ के कुछ बाल नोंचकर उसी डिबिया में रख लें और उसका पेट चीरकर दिल व ज़िगर निकालकर बाकी चीजों को वहीं गाड़ दें और घर आवे। घर आकर उस दिल व जिगर को किसी दूसरी लोहे की डिबिया के सहित उनको धूप में सुखालें । जब सूख जाय तो इन दोनों पर भी सिंदूर लगाकर लाल कपड़े में लपेटकर उस हड्डी वाली डिबिया में ही रख दें और इंस डिब्बी को अपने पास सुरक्षित रखलेजब कभी आपको चमत्कार दिखाना हो या भविष्य वाणी करना हो किसी अविवाहिता लड़की या लड़के को एक लकड़ी की चौकी पर कम्बल बिछाकर बिठा दे या लिटा दें और उसकी आंखों पर काले कपड़ी की पट्टी बांध

दें और इस डिबिया को किसी झोले में रखकर उसके दाहिनी हाथ के नीचे रख दें । बस 15 मिनट के बाद वह व्यक्ति आपके प्रश्नों का सही उत्तर देगा ।

15-चलते बैल रुक जावें

विधि-जब किसी गधे के शव को किसी कौवे को नौचते देखें तो उसका पीछा करके उसका घोंसला देखलें फिर शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी रात को लगभग 11 बजे उस घोंसले से जाकर कौवे को पकड़ लावें और घर जाकर पिंजड़े में 10 दिन तक बन्द रक्खें और साधारण आहार देते रहें । कौवे को पकड़ने के दसवें दिन रात में किसी बांझ स्त्री के बाँये पैर के नीचे की मिट्टी एक चुटकी ले आवे और उसे भेड के रक्त में सान कर दही में मिलाकर किसीं बर्तन से ढककर बाहर ओस में रख दें । दूसरे दिन सुबह इस दही पर पिसी हुई हल्दी बुरक दें और कौवे को खिलावे यदि कौवा ऐसे न खाये तो उसमें कुछ रोटी के टुकड़े भी डाल दें और उसी रात को कौवे को मारकर उसके पेट से आंतें निकाल लें और धूप में सुखाकर सुरक्षित रख लें । जब आप इसका कौतुक देखना चाहें तो इन आंतों में से एक टुकड़े को काटकर उसे स्थान पर डाल दें जहाँ पर बैल चलते व घूमते हों बस जब तक वह टुकड़ा उठाया या हटाया न जायेगा तब तक वे वैल न चल सकेगा चाहे उन्हें जितना मारा पीटा क्यों न जाय ।

बिच्छू पैदा करो

गधे का पेशाब तथा भैंस का गोबर मिलाकर एक मिट्टी के बर्तन में रख दो । कपड़े से उसका मुंह बन्द कर दो धूप में रख दो एक घण्टा बाद बिच्छू पैदा हो जावेंगे ।

पानी में पत्थर तैरेंगे

रविवार के दिन खरगोश और स्यार का गोबर झरबेरी की गुठली तलाश कर लाओ । उसे पीसकर पत्थर का लेप कर दो । यदि यह पत्थर पांनी में डाला जावेगा तो वह डुबेगा नहीं।

हथेली पर सरसों पैदा करना

साफ सरसों लेकर दुधी के रस में भिगो दो चार पहर भीगने दो । फिर छाया में सुखा लो । जब तमाशा करना हो अपने हाथ पर मिट्टी रख लो और वह सरसों जरा सी वो दे इसके बाद मीठा पानी खारी न हो छिड़को तुरन्त सरसों पैदा हो जायेगी ।

आम का पेड़ उगाना

आम की गुठली थूहर के दूध में 21 बार पुट देकर छाया में सुखालो । जब तमाश करना हो अच्छी मिट्टी में उस गुठली को दबा दो और मीठा पानी छिड़को फौरन पेड़ पैदा होगा ।

जल में न डुबना

लिसोड़े का गूदा निकालकर उसके रस में डुबोकर 11

बाई एक मृगछाला पर लेपकर दे तो वह मृगछाला नदी में बिछा कर पद्मासन से बैठ जावे डूबेंगे नहीं ।

ज्यादा दिखाई दे

रविवार के दिन जमुना के तट पर जाकर एक पीले रंग का मेंढ़क ले आओ । वह मेंढ़क किसी मेंढ़की पर चढ़ा हुआ होना चाहिये इसको छाया में सुखा डालो । फिर आग में डाल कर गरम कर लो । जो आदमी आँखों में लगायेगा उसे अन्धेरी रात में भी दिखाई देगा ।

बिना ताली के ताला खुलना

रविवार को दोपहर के समय नंगा होकर चील और काग के घोंसले ले आओ । गूगल की धूनी देकर उसकी भस्मी कर लो । जिस बन्द ताले पर उसकी भस्म डाली वह अपने आप खुल जायेगा ।

पानी से आग निकलना

नौनिया गंधक और नौसादर दोनों की पोटली बनावे और जल की बूंद डालकर मसले तो आग पैदा हो जायेगी ।

पवन से आग पैदा हो

ऊंट की मेंगनी जलाकर शहद में बुझालो डिबिया में बन्द करके रख छोड़े जब आग की जरूरत हो उसे हवा में खोलकर रख दें ।

जुआ जीतना

हस्त नक्षत्र पर इतवार का दिन हो तो शनिवार को साँझ

के समय लीची पेड़ को निमन्त्रण दें आओ कि कल से आपको अपने घर ले चलूंगा और जुआ जीतने का यन्त्र बनाऊंगा। जुआ में जो जीतेगा आधा दान कर दिया करूंगा। इतवार को प्रात: सूर्योदय से पूर्व जाकर उसे लाओ। उसकी जड़ ले आओ। गूगल की धूनी देकर ताबीज की तरह दाहिने हाथ में बांध लो। जुआ में शर्तिया जीतोगे।

विद्या पढ़ना

माघ के महीने में कृष्णपक्ष की अष्टमी को जब पूर्वाषाढ़ हो आधी रात के समय गुरु से मन्त्र लो-ओं ही'। फिर से ही वह मन्त्र अपनी जीभ पर लाल चन्दन से अगर की कलम द्वारा लिखावे फिर उसका जप करे एक माला रोज़ सरस्वती देवी की कृपा होगी हृदय का अन्धकार दूर होगा जो चाहोगे पढ़ लिख जाओगे।

चीनी का बर्तन जोड़ना

कलई का चूना और अंडे की सफेदी दोनों को मिलाकर पीसकर टूटे बर्तन चीनी वालों को जोड़ दो तो वह जुड़ जायेगा।

सोने का चमकाना

कलमी शोरा भून डालो बराबर का चूना कलई वाला मिला दो दोनों को मीठे पानी में पीसकर सोने के ऊपर लेप कर दो और धूप में सुखा लो छुड़ाने पर सोने का जेबर खूब चमकने लगेगा।

हथियार को चमकाना

पुराने सिरके को कटोरी में लो । हथियारों पर चुपड़ दो और धूप में सुखा लो सूख जाने पर रगड़कर धो दो हथियारों पर चमक आ जायेगी ।

बिगड़े घी का सुधार

घी को कड़ाही में रखकर चूल्हे पर चढ़ा दो जब खूब गरम हो जावे तब प्याज काटकर डाल दो । जब वह जल जावे तब उतार कर छान लो एक सेर में एक गांठ प्याज काफी है।

काली मिट्टी का बर्तन हों या बोरे हों हींग के पानी से तर कर भर देना चाहिए । कभी कीड़ा न लगेगा ।

रेशमी कपड़े पर चिकनाहट दूर हो

रेशमी कपड़े पर चिकनाहट लगी हो तो उस पर सेलम खड़िया पीसकर डालो तांबे या पीतल के बर्तन में आग भरकर उस पर फेरो तो चिकनाई जाती रहेगी ।

बच्चे का नारा

अगर बच्चे का नारा कोई अपने पास रखेगा तो वह दो काम करता है । रोगी के तकिया के नीचे रक्खे तो वह जल्दी अच्छा हो जायेगा । यदि किसी स्त्री को खिलावे तो पुत्र पैदा हो फिर चाहे वह बाँझ ही क्यों न हो ।

सिंदूर बनाना

शीशा एक सेर, सेंधा नमक आधा सेर सुहागा आधा

पाव शोरा डेढ़ पाव लेकर चूल्हे पर कढ़ाही रख दो । सीसा को मिलाओ और शोरे की चुटकी डालते जाओ । चमचे से उसे चलाते जाओ फिर सांभर नमक की चुटकी डालकर उसी तरह मिलावे । फिर सुहागे की चुटकी डाले । चमचे से हिलाया जावे जब तक शीशा जल न जावे तब तक इसी तरह शोरा नमक और सुहागे की चुटकी छोड़ते रहो । चमचे से बराबर चलाते रहना चाहिए । बस बहुत अच्छा सिंदूर बन जायेगा ।

हीरा और मोती बनाना

एक लकड़ी में एक गज मलमल नई बांध दो और उस कपड़े को चने के खेत में घुमाओ । प्रात: 5 बजे उठकर ऐसा करना चाहिये । जब उस पर खूब क्षार जम जावे छाया में उस कपड़े को सुखाओ । चालीस दिन बाद उस कपड़े पर डालो। जब ओलों की वर्षा हो तो उन टुकड़ों में ओले बांधो । इसके बाद कढ़ाई में अण्डी का तेल डालो । जब तेल गरम हो उन ओलों यानी गाँठों को उसमें डाल दो जब चिड़चिड़ाना बन्द हो जावे उतार लेना चाहिए । हीरा मोती बन गये सुई से छेद का दो । छाया में सुखा लो । फिर चावल के आटे में उनको रगड़ कर साफ कर लेना चाहिए ।

मूंगा बनाना

शंख और सिंदूर को बराबर लेकर भेड़ के दूध में खरल करो जब खूब बारीक पिस जावे तब जितना बड़ा चाहो मूंगा

बना लो । तांबे के तार से छेद करो और केले के पत्ते में रखकर छाया में सुखा लो । फिर एक तांबे के तार से छेद कर उसकी एक माला बनाओ । एक कढ़ाई में महुए का तेल डालकर गरम करो । फिर उस माला को इस प्रकार लटकाओ कि तेल में मूंगा न लगे, और दूर की आँच से सब पक जावे जब खूब पक जावे छाया में सुखाकर रखलो ।

पदम राग बनाना

लाख 20 तोले लेकर साफ करो 80 तोले जल डालकर उसको कढ़ाइ में चढ़ाओ मन्द-मन्द आंच जलाओ जब लाख पानी से मिल जावे, तब ढाई तोला सुहागा उसमें डालकर खूब पकाओ ! पकने की परीक्षा यह है कि एक बूंद कागज़ पर डालो । अगर कागज पर वह बूंद फूट जाय तो कच्चा है और न फटे तो पक्का है शीशी में भरकर रख छोड़ो। जब आकाश से ओले बरसे तो ओलों को उस में डुबाकर कढ़ाई में छोड़ो जब कड़ाही गरम हो जावे उसको निकाल लो अच्छा पदम बन गया है ।

नीलम बनाना

मजीठ 10 तोला कटी 80 तोला जल में उबालकर शीशी में भर दो । जब ओले बरसे तब आंच पर कढ़ाई चढ़ाकर महुए का तेल डालो । आग मन्द मन्द जलाओ उन ओलों को कढ़ाई में छोड़ दो, जब वे पक जावे । तब निकाल लो बहुत अच्छे नीलम तैयार हो जावेंगे ।

पारे का बर्तन बनाना

पारा आधा सेर नीला थोथा ढाई पाव लेकर रखो । नीला थोथा पीसकर कढ़ाई में रखो । बीच में गड्ढा बनाकर पारा भर दो उस पर नीला थोथा डालो फिर एक मिट्टी का कटोरा उसके ऊपर ढकना चाहिए । फिर एक पत्थर दस सेर का उस कटोरे पर रख दो । कटोरा फूटने का डर हो तो बजाय मिट्टी के पीतल या काँसे के कटोरे से भी काम लिया जा सकता है । फिर उसे कढ़ाई में जल डालो । चूल्हे पर उस कढ़ाई को चढ़ाकर मन्द-मन्द आग जलाओ । जिससे वह पानी औटता रहे । एक पहर में जब पानी जल जावे तब कढ़ाई उतार लो उसमें से पारे को निकाल लो । पानी से सूब धो डालो । फिर उसे कपड़े में छान लो पारा कपड़े में से छाना जावे उसको फिर अच्छी तरह से पकाओ । जो कपड़े रह जाय उसे मिट्टी के सांचे में जमा दे । उसके भीतर तुलसी के पत्तों का रस अथवा नीम का रस भरकर तीन दिन बाद उस पात्र को पानी में छोड़ दें । दो घड़ी में उसके ऊपर की मिट्टी गल कर अलग हो जायेगी पारे का बना हुआ बर्तन निकल आयेगा। यदि उस बर्तन में दूध भरकर पिया जावे तो पेट के सम्पूर्ण रोग दूर हो जावेंगे । उसके शरीर में किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं आयेगी ।

कपूर का प्याला बनाना

कपूर नारियल की गिरी बराबर लेकर पीसकर तांबे या

पीतल के पात्र में रख दो उसके ऊपर मिट्टी का प्याला औधा दो उसके नीचे दीपक की ज्योति की आंच तब वह कपूर मिट्टी के प्याले में जम जायेगा। उतार कर ठण्डा करो। उस सांचे को पानी भरे घड़े में रख दो। जिससे मिट्टी गल जावेगी और खाली प्याला रह जायेगा अगर किसी आदमी के सिर में गरमी चढ़ जाये यानी सरशाम की बीमारी हो जावे तो उस कटोरे में जल पिया करे। तीन दिन में वह अच्छा हो जायेगा।

नमक का प्याला बनाना

गाजर के बीज और सेंधा नमक बराबर लेकर पीसो और मिट्टी के प्याल में जमा लो। धूप में सुखालो मूली के रस में उसे धो डालो। मिट्टी ऊपर जायेगी और नमक का कटोरा बन जायेगा।

काली स्याही बनाना

पीपल की लाख पाव भर लो 2 सेर पानी को कढ़ाही में चढ़ा दो जब पानी खूब खौल जावे, पीपल लाख उसमें छोड़ दो। जब लाख गल जावे, पठानी लोद और सज्जी व सुहागा व फिटकरी एक तोला लेकर उसमें डालो नीचे खूब आग जलालो। पकने की परीक्षा यह है कि कागज पर उससे लिखो और फूट जावे तो और भी पकाना चाहिए न फूटे तो उतार लो। उसमें कागज डालकर रगड़ो और शीशी में भर लो।

लावा गुण और काम

शनिवार के दिन संध्या समय लावा और दाने जौ के ले जाकर लावा के पेड़ की पूजा करो और गूगल की धुनी दो लावा और जो के दाने उस पर डाल देना चाहिए और निमन्त्रण दे जाओ कहो कि मेरा नयौता सब कामों के लिए है हे गनेश ! तुम्हारी महिमा कौन वर्णन कर सकता है इतना कह प्रणाम करो । अपने घर चले आओ । रास्ते में पीछे फिरकर मत देखो । रविवार को सूर्योदय के पहले जाकर उसे यानी लावा (अपामार्ग) को जड़ सहित उखाड़ लाओ सर्य निकलने न पाये कि अपने घर में आ जाओ किसी की छाया उस पर न पड़ने पाये । घर लाकर उसे गूगल की धूनी दो और पवित्र स्थान में रख दो उसके कारण आपके समस्त काम पूरे होते जायेंगे ।

हांजरांत करना

अपामार्ग यानी लव्रा यानी ओंगा की सूखी लकड़ी लाओ उसमें रुई लपेटो उसकी बत्ती बनालो और घी दीपक में रख जलाओ किसी दस साल के बच्चे को स्नान कराकर कहो इस ज्योति की ओर देखो । उसे पक्षियों का राजा दिखाई पड़ेगा । उससे जो बात पूछी जायेगी उसका वह उत्तर देगा राजा की आवाज केवल वह लड़का ही सुन सकेगा हर एक सवाल का जवाब प्राप्त हो सकता है ।

बिच्छू का इलाज

शनिवार की शाम को अपामार्ग के पास आओ और डोरे को हल्दी में रंगकर साथ ले जाना चाहिए । पहले उस वृक्ष की पूजा करो । फिर डोरे से उसे लपेट दो और कहो कि वृक्ष के राजा ! आपको हम परोपकार के लिए कल ले जावेंगे। या ज़िसको बिच्छू काटे उसको आप उतार दिया क़रना । दूसरे दिन इतवार को सूर्योदय से पहले जाकर उसको समूल उखाड़ लाओ छाया में सुखाकर छोड़ो जब किसी को बिच्छू काटे तो वही पत्ती जरा पीस कर रख दो । सारा विष बाहर निकल जावेगा । बिच्छू पर सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है ।

उल्लू कल्प

उल्लू का पित्त निकालो । उससे इस प्रकार से काजल बनालो जब रविवार की अमावस्या हो तो तब करे उस दिन खोपड़ी आदमी की लाओ । श्मशान में जाकर नंगे हो दीपक में उस विष यानी पित्त का दीपक जलावे और दूसरी खोपड़ी में काजल पारे । 80 बार मन्त्र विधान से जपे । उस काजल को तांबे के यन्त्र में रख दो और उसका मुंह मोम से बन्द कर दो उस ताबीज को कोई देख नहीं सकता । उस काजल को अंजन करने से पृथ्वी का गढ़ा धन दिखाई पड़ता है । समस्त जोगिनी उसे दिखाई देगी गौ मूत्र से नेत्र धोने पर असर चला जायेगा ।

मन्त्र

ओं नमो महेश्वरी भरि-भरि अंचे विधने पड़ेश्वरी कुरु 2 स्वाहा ।

उल्लु सिद्धि

रविवार के दिन जब अमावस्या हो एक उल्लू की चर्बी निकालो । ऊपर लिखाी हुई विधि से उसका काजल बनाओ। जो आदमी काजल को अपनी आंखों में लगावेगा । तो यह सबको देखेगा मगर उसको कोई भी न देखेगा ।

उल्लू का गुण

रविवार के दिन जब अमावस्या हो तब उललू के दाहिने पैर की पिंडली काटो । उसे सरसों के तेल में डालकर पीसो उस अंजन को जो आंखों में लगावेगा यह सबको देख सकेगा। गौ मूत्र में नेत्र धोने से असर चला जायेगा ।

उल्लू का हुनर

रविवार के दिन जब अमावस्या हो तो तब एक उल्लू तथा एक बिल्ली के नेत्र निकाल लावे उनको सरसों के तेल में मिलाकर खूब महीन पीस लो । मनुष्य अपनी देह में मसले तो वह क़िसी को दिखाई न पड़ेगा । चाहे जहाँ चला जावे गौमूत्र से शरीर धो डालने पर असर चला जायेगा ।

उल्लू का आखिरी गुण

जब रविवार को अमावस्या हो तब उल्लू के नेत्र सरसों

के तेल में पीस लो । राम बन की रुई और श्मशान मे जाकर दो खोपड़ियों की मदद से कागज पारो उसको जो आंखों में लगायेगा । वह सबको देखेगा, मगर उसकी कोई न देखेगा । अपील करने के काम में उल्लू अब्बल नम्बर की चीज है ।

वशीकरण विधान

रविवार अमावस्या के दिन उल्लू का मांस लो और केशर और लाल चन्दन एक 2 तोला मिलाकर पीस लो और मूंग बराबर गोली बना लो एक गोली मन्त्र पढ़कर जिस स्त्री या पुरुष को पान में रखकर खिला दोगे तो वह वश में हो जायेगा ।

मन्त्र

ओउम् नमो महा पंखेश अमुकस्यं मम वस्यं कुरु 2 स्वाहा ।

दूसरी विधि

अमावस्या को रविवार के दिन उल्लू की जीभ लाओ गुगल की धुनी दो मन्त्रों के साथ मिठाई मिलाओ और जिसको खिला दोगे वह वश में हो जायेगा मन्त्र ऊपर वाला ही है । जहां अमुकस्य है वहाँ पर नाम लेना चाहिए कि उसको वश में करना है ।

तीसरा विधान

अमावस्या वाले रविवार के दिन उल्लू का तालु लाओ पान में रखकर जिस स्त्री को खिलाओगे वह जन्म भर गुलाम

हो जायेगी ।

चौथा विधान

अमावस्या वाले रविवार को उलुक के नेत्र कुमकुम गौरोचन नागकेशर इन चार चीजों को खूब बारीक पिसवा ले गोली बनाकर रख छोड़े । राजा या शत्रु से मिलने जाय तो मन्त्र पढ़कर गोली को घिसे और अनामिका उंगली में लगावे। मन्त्र 108 बार जपना चाहिये मन्त्र वही ऊपर वाला हे । इससे राजा और शत्रु दोनों वश में हो जाते हैं ।

पांचवा विधान

अमावस्या वाले रविवार की उलुक की चोंच ले आओ नागकेसर गोरोचन सफेद आक की जड़ इन चीजों को लेकर पीसा जल के साथ ऊपर वाले मन्त्र के साथ तिलक लगाओ। फिर जिसकी आंख भर देखोगे वही वश में हो जायेगा ।

छटवां विधान

परित्रा अमावस्या के दिन उल्लू के कलेजे के साथ मैंनसिल असगन्ध चमगादड़ की वीट भैंस का सींग, कुट गोरोचन और केशर बराबर लेकर गौ मूत्र में खूब अच्छी तरह पीस कर उसी मन्त्र से तिलक करे और जिस सभा में आवे तो सारी सभा उसी के मन मुताबिक काम करेगी ।

सातवां विधान

रविवार की अमावस्या के दिन उल्लू की जीभ और ढाई पत्ती नीम की पत्ती लेकर खूब महीन पीस लो उसका

मंजन आंखों में करो फिर जिसकी आंखों से आंख मिलाओगे वह वश में हो जायेगा ।

वशीकरण की बुरकी

रविवार अमावस्या के दिन घुग्घु और बिल्ली यानी मजरी के नेत्र लाओ । इनमें पारा केशर, वच मिलाओ और नील रस, सरसों नाग केसर इन सबको बराबर तोलकर मिला दो । सात दिन तक खरल करो जिसके ऊपर बुरकी को डालोगे वह वश में हो जायेगा ।

हाथ पर आग का अंगार रखना

नौसादर के पानी में कपूर घिसकर हाथों पर खूब मलो अच्छी तरह हाथों को सुखा लो फिर उस पर आग का लाल 2 अंगार बेखटके रख लो हाथ बिल्कुल न जलेगा । तमाशबीनों को बड़ा आश्चर्य होगा ।

आग से उंगली न जले

अरानिक 2 भाग लेकर उसमें जरा सा आधा भाग कपूर दोनों चीजों को पानी में खूब महीन पीसकर उंगली पर लेप करो और शीशे को खूब आग पर लगाकर सब तमाशबीनों के सामने अपनी उंगली डाल दो जलेगा नहीं ।

बबूल के कांटे चबाना

द्रोण नमक पुष्प के पत्ते मुंह में चबाकर उसका रस मुंह में रख लो और ऐसे ढंग र यह काम करो । जिससे तमाशबीन लोग बिल्कुल न देख सके फिर तो तमाशबीनों के

सामने बबूल के कांटे मजे से चबाया कुछ भी न होगा ।

जलते हुए रुमाल को सिर के ऊपर रखना

बढ़िया चमेली का तेल सिर पर मलकर और उस पर घी गुबार का रस पोतकर तब तमाशे मैदान में आओ और सबके सामने रुमाल को तेल से भिगोकर उसमें आग लगा दो। और बेखौफ सिर पर रखलो सिर के बाल तक न जलेंगे सबको ताज्जुब होगा ।

नीबू का विचित्र नाच

कागजी नीबू लेकर उसकी दो फाँक करो । उसमें पारा भर दो ज्यों का त्यों बांध दो उस नीबू को धूप में रख दो तब नीबू उछल कूद कर नाचने लगेगा ।

आग का खुद व खुद जलना

पत्थर का चूना लेकर फासफोरस उसमें मिलाओ और कपड़ा से बांधकर कांच के बर्तन में रख दो और कुछ यों ही मन्त्र पढ़कर पानी का छींटा मारो फौरन आग जल उठेगी और तमाशबीनों को बड़ा आश्चर्य होगा ।

लिखी हुई चीज जले

गन्धक को खड़िया मिट्टी के साथ पीसकर पानी में घोलकर दीवार परहरूफ (अक्षर) या कोई चीज फूल या पुतली बनाकर रात के समय उसमें एक सिरे पर दियासलाई लगाकर जला दो तो जो लिखा हुआ है जलने लगेगा और खूबसूरत मालूम होगा । देखने वाले चकित होंगे ।

लिखे हरूफ का छुड़ाना

नौसादर, सोहागा खरिया तीनों को बराबर लेकर पीसकर लिखे हरूफ पर मले तो उड़ जायेंगे । पर जरा धूप दिखा लो।

बिच्छू पैदा करने की तरकीब

गधे का पेशाब और भैंस का गोबर एक मिट्टी के बर्तन में ढककर रख दो तत्काल बिच्छू पैदा हो जायेंगे ।

अण्डे का उछलना

मुर्गा का अण्डा उसमें जरा सा छेद करके खाली करो फिर उस छेद से थोड़ा सा पारा अण्डे में छोड़ अण्डे के उस छेद को मोम या किसी दूसरी चीज से बन्द कर दो और गरम बालू पर अण्डे को रखें वह उछलने लगेगा ।

कागज की कढ़ाई

कागज की कढ़ाई बनाकर उसमें तेल भर दो जहां तक तेल कागज में तेल भरा होगा वहां तक कागज नहीं जलेगा । खुशी से आग पर चढ़ा दो और झूठ मूंठ कुछ मन्त्र कहते रहो कि लोग यह समझेंगे कि मन्त्र के जोर से कढ़ाई नहीं जलती यह आजमाया हुआ है ।

गले पर छुरी चलाना

यह छुरी इस प्रकार बनाई जाती है कि उसके बीच में एक गोल खमदार लोहा होता है जो कि गले के बराबर आ जाता है । जब तमाशा करे तो कपड़े से आढ़ में छुरी को गले में लगाओ और किसी चीज छुरी का बाकी हिस्सा छुपालो ।

बिना खूंटी के खड़ाऊं पर चलना

सफेद धुधवी भिगोकर पीस लो और भेड़ के दूध में मिलाकर खड़ाऊं में लगा दो और पैर पर रखी खड़ाऊं पैर के साथ ही उठेगी और देखने वाले आश्चर्य करेंगे ।

आम का पेड़ लगाना

एक टहनी आम की लेकर उसकें पत्ते छोड़कर उसे भीगे कपड़े में लपेटकर रखो और जिस समय तमाशा करना हो तो कुछ मुख से कहते 2 कपड़ा हटाकर टहनी निकाल लो और किसी चीज में खड़ा कर दो और जड़ उसकी ढक दो उसी वक्त पेड़ मालूम होगा देखने वाले चकित होंगे ।

जीभ पर छुरी चलाना

यह छुरी भी खमदार होती है लेकिन खम इतना छोटा होना चाहिए जिसमें जीभ आवे, फिर परदा करके जीभ में खम पहिन जो छुरी जीभ के आर पार मालूम होगी ।

आग से जले नहीं

बड़ की जड़ और घोड़े का नाखून यह दोनों बराबर पीस लो भाड़ भट्टी या चूल्हा जहां चाहो वहां जला दो उसमें धुंआ बहुत होगा मगर आग न जलेगी ।

दिये के पास पतंगे न आयें

प्यारे भाइयों रात के वक्त दिये में पतंगे गिर 2 आप लोगों को पढ़ने लिखने में बड़ी तकलीफ देते होंगे । तो आप लोगों के शुभीते के लिए मैंने एक सहज ही तरकीब उनको

दूर करने की निकाली है सुनिये ! केवल प्याज को कतर 2 उसके टुकड़े दिये पर छोड़ दीजिए । पतंगे एकदम गायब हो जायेंगे ।

जड़ैया बुखार की सहज दवा

धतूरे के सात पत्ते और सात काली मिर्च पानी में पीसकर रविवार के दिन 3 दिन की पारी बाले की पिलादो फौरन आराम देगा ।

तृतीय खण्ड

उल्लू द्वारा विभिन्न रोगों के तांत्रिक उपचार उल्लू के रक्त द्वारा तांत्रिक उपचार

बांझ पुत्रवती हो

विधि-किसी मादा उल्लू को जो अण्डा दे रही हो पूर्णमासी की रात में दो बजे करीब पकड़ लावे परन्तु घोंसला पहले से ही देख रखना चाहिए । और पकड़ना भी बड़ी चतुरता सावधानी से चाहिए जिससे कि उसे आहट न मिले अन्यथा वह उड़ जायेगी । उसे लाकर घर पर पिंजड़े में रात भर रखे सुबह उसे गेहूं के आटे की रोटी मलीदे में घी व चीनी मिलाकर खिलावे और जब वह खा चुके तो उसके दो घण्टे बाद उसे मारकर उसका रक्त पांच बूंद लेकर किसी बड़े बर्तन टब या बाल्टी में डाल दे साथ ही उसमें पांच मासा काला रंग भी डालकर उस लकड़ी की छड़ी से खूब चलाये और उसे सुरक्षित रखलें जब वह बांझ स्त्री मासिक धर्म का

अंतिम स्नान करे तो उसी से स्नान करके रात में पति के साथ सहवास करे तो निश्चय ही उस स्त्री के एक सुन्दर हृष्ट पुष्ट दीर्घायु सन्तान होगी ।

2. उल्लू के बालों द्वारा तांत्रिक उपचार

बन्ध्या के सन्तान

विधि-यदि किसी उल्लू के दोनों पैरों के बीच के कुछ बाल नाभि के समान उभरे हुए हो तो उसे पकड़ कर उन बालों को काट कर उसमें तीन माशा शीशा के चूर्ण और तीन रत्ती कस्तूरी मिलाकर मोम और शहद में गूंथकर रेशमी वस्त्र से लपेटकर सोने या चांदी के ताबीज में रखकर रेशमी धागे से बांधकर स्त्री की नाभि पर लटकाये तो अवश्य ही एक वर्ष के अन्दर सन्तान हो ऐसा उल्लेख है ।

3. जीवन पर्यन्त जवान ही रहे

विधि-किसी अमावस्या की आधी रात को 10 बजे जाकर कोई उलूक पकड़ लावे और उसे लोहे के तारों द्वारा बनाये गये पिंजड़े में रखें । दूसरे दिन सुबह नित्य सात दिन अपने आप शौच दातुन व स्नान से निबट कर उस उलूक को भी खूब नहलाये और पिंजड़े को साफ करे । जब उलूक नहाने के बाद स्वस्थ और शान्त होकर बैठ जाये तब आप उसे किसी नये मिट्टी के प्याले में अच्छा सा दही व चीनी और उसी में भली प्रकार से गुलाब जल मिलाकर खिलायें बस उसके बाद उसे जो चाहे दाना पानी दें । इसी भांति सातवे

दिन उपरोक्त रीति से खिलाकर रात में किसी एकान्त स्वच्छ कमरे में धूप अगरबत्ती चन्दन बुरादा एवं अन्य सुगन्धित वस्तुओं से सुगन्धित करके कमरे को चारों ओर से बन्द करके उस उलूक को पिंजड़े से निकाल कर आजाद कर दे और चुपचाप एक किनारे बैठकर ईश्वर का स्मरण करे । आधा घंटा के बाद उसे पुनः पकड़ ले और बस्ती से दूर बाहर ले जाकर उसकी पीठ पर के मुलायम बाल नोंचकर उसे छोड़ दे और घर वापस आवे घर पर इन बालों को सिंदूर में लपेटकर किसी सोने चांदी के ताबीज मे मढ़वा कर अपने दाहिने हाथ में धारण करे । बस यंत्र के प्रभाव से आप सदैव जवान स्वस्थ व चुस्त रहेंगे ।

4. पागलपन दूर हो

विधि-यदि किसी उलूक का या कुत्ते के दोनों नाखून और बिच्छू के डंक को रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में लेकर ऊंट के चमड़े में रखवाकर ताबीज़ बनाकर पागल के गले में पहिनावें तो वह ठीक हो ।

5. मासिक धर्म जारी हो

विधि-एक स्थान पर लिखा कि रविवार पुष्य को किसी उल्लू को मारकर उसकी चोंच निकाल ले और गूगल की धूनी देकर अपने पास सुरक्षित रख ले और जिस स्त्री का मासिक अभीष्ट हो उसके गुजरने के मार्ग में उसी चोंच को कैंची से 3-5 या 7 लकीरें जमीन पर खींच दें, ज्योंहि स्त्री

उन लकीरो को लांघेगी उसकी महावारी जारी हो जायेगी । परन्तु ध्यान रहे कि उन लकीरों को उस स्त्री से पहले कोई दूसरा न लांघने पावे ।

6. आँखों की ज्योति तेज

विधि-यदि किसी उल्लू के घोंसले पर नित्य बिना उसे छेड़े दोपहर के समय कुछ सरसों का खालिस तेल टपका आये और वह काम तब तक जारी रखे जब वह घोंसला तेल में बिल्कुल चिकना न हो जाय । बस आप विश्वास करें कि उसकी आंखों में कभी कोई रोग न होगा और न उसकी निगाह ही उसके जीवन पर्यन्त कभी कमजोर होगी और न उसकी सन्तान की ही दृष्टि खराब होगी यह उपाय पुस्तों के लिए काफी है ।

7-उल्लू तन्त्र द्वारा चेचक से सुरक्षित हो

चेचक या शीतला या छोटी बड़ी माता के निकलने के नाम से यह रोग प्रायः बच्चों के ही होता है । इसमें पहले रोगी को बुखार आता हे चेहरा लाल हो जाता है और शरीर में दाने निकलने लगते हैं जिससे बड़ी पीड़ा व वेदना होती है । छूआछूत से यह रोग बहुत फैलता है ।

बचने के उपाय-जिस गांव में यह बीमारी फैल रही हो वहाँ बालों को चाहिए कि किसी सोमवार को एक उल्लू पकड़े और तीन दिन तक उसे रोटियों पर घी चुपड़ कर खाँड़ लगाकर नित्य खिलावे और उसके शरीर से 15 छोटे बड़े

पंख नोंच लें । तीसरे दिन उसे खिलाकर गांवों के तीन चक्कर लगाकर उसके माथे पर दही व मक्खन लगाकर उसका मुंह पूरब की ओर करके उड़ादे और पंख निकाले थे उसमें से चार पंख लेकर बाहर किसी सख्त जमीन में गाढ़ दे । बस आप विश्वास करें कि उसी समय से फिर किसी दूसरे बच्चे को यह बीमारी न होगी और जो बीमार होंगे वह शीघ्र ही स्वस्थ हो जावेंगे शेष बचे हुए पंख का इस प्रकार से दूसरी बार इस्तेमाल करें ।

8-बिना कष्ट बालक के दांत निकलें

बच्चा पैदा होने के कुछ दिनों बाद से ही उसके दांत निकलना शुरू हो जाता है जिससे उसे ज्वर दस्त आने लगते हैं इससे बच्चा बहुत ही चिड़चिड़ा और निर्बल हो जाता है, किन्तु निम्नलिखित उपाय से बच्चे के दाँत बिना किसी उपद्रव के और कष्ट के निकल आते हैं ।

उपाय-यदि बालक लड़का हो तो नर और लड़की हो तो एक मादा कौवा पकड़ें और घर पर उस बच्चे की अपनी उंगली से नित्य पांच दिन तक उस कौवे की चोंच खोलकर उसके मुंह में दही और शहद मिलाकर चटावे और चोंच के किनारों पर रगड़ें पाँचवे दिन यह रगड़कर उसे छोड़ दे बस फिर बालक के जो दांत निकलेंगे बड़ी सुगमता और बिना कष्ट के निकलेंगे ।

9-गुम बच्चा मिले

उपाय-किसी बच्चे के गुम हो जाने पर उसका पिता शाम को कौवे क घोंसले की ओर जावें और जिस कौवे को भटका देखें आर्थात् जो अपना घोंसला भूल गया हो और मारा 2 फिर रहा हो ऐसे कौवे को किसी यत्न से पकड़ले और घर लाकर सफेद चन्दन और कपूर की धूनी दे तथा गाय के दूध में शहद मिलाकर उसे पीने के लिये रक्खे और सो जाये यदि कौवे ने सुबह तक उसे पी लिया तो उसे फिर रोक ले और साधारण दाना पानी दें और रात में फिर उसी प्रकार से दूध में शहद मिलाकर पुनः रखदे और तब तक यह उपाय जारी रखे जब तक कि वह पानी पी न ले जिस रात में कौवा वह दूध पी जाय उसके सुबह उस कौवे को जाकर जहाँ से पकड़ा था वहीं छोड़ दे। ज्योहि वह कौवा अपने सही घोंसले में पहुंचेगा निश्चय ही उस समय आपको बच्चा मिल जायेगा या उसके निश्चय पर होने की सही सूचना आपको मिल जायेगी।

10-बच्चे की खांसी दूर हो

विधि-यदि उल्लू का चूतड़ मंगल के दिन लेकर किसी लाल कपड़े में रखकर ताबीज बनाकर बच्चे या बूढ़े को जिसे भी खाँसी आती हो उसकी कलाई में बाँधे तो खांसी दूर हो।

11-बच्चे की खांसी दूर हो

विधि-यदि उल्लू की बीट को कपड़े में रखकर उसकी पोटली बनाकर बच्चे के गले में पहिनावें बच्चे की खाँसी

निश्चय ही दूर हो जायेगी ।

12-बालक के सूखा मसान का उपचार

उल्लूओं में एक विशेष प्रकार का कुछ ऊंचा और मरियल सा उल्लू होता है उसकी गर्दन बहुत पतली व सूखी सी होती है । यदि ऐसा उल्लू किसी दूध पीते बच्चे पर अपनी छाया (परछाहीं छोड़ दे तो उसे भूखा मसान का रोग हो जाता है । बच्चे का जिगर खराब हो जाता है उसे दस्त आने लगते हैं और वह बदन पर सूखता जाता है ।

उपाय-एक चूल्हे पर मन्द आंच कर एक तबा रखे और उस पर सोंफ के बीज को उल्लू के पैर के डन्ठल से चला चलाकर उनको भून रहे । जब वह बीज लाल रंग हो जावें तो उन्हें उतार कर बारीक 2 पीस ले और नित्य 3 माशा चूर्ण अर्क वेद मुश्क एक तोले के साथ सुबह खिलाया करे ईश्वर चाहेगा तो वह बच्चा बहुत ही शीघ्र स्वच्छ व हृष्ट पुष्ट हो जायेगा ।

14-पशू का दूध सूख जाने पर उसका उपचार

लोगों का कहना है कि यदि कोई व्यक्ति खुला हुआ दूध सर पर रखे लिये जा रहा हो उसमें उल्लू बीट करदे तो निश्चय पशुओं का दूध उस बर्तन में होगा उनका दूध सूख जायेगा । जिससे वह दूध देंगे ही नहीं और यदि देंगे तो बहुत ही कम वस्तु ऐसे पशुओं का उपचार निम्न रीति से करे ।

उपाय-एक मादा उल्लू को पकड़ कर उस पशु के पेट के नीचे जिसका दूध सूख गया हो मार डाले अर्थात् छुरी से

गरदन काट दे परन्तु इस प्रकार काटे कि उसके रक्त की छींटे पशु के पिछले पैरों पर अवश्य पड़े । बस इन छींटों को अपने आप ही मिटने दें और उस उललू की लाश बाहर फेंक दें । आपको देखकर आश्चर्य होगा कि तीन दिन के अन्दर ही पशु पहले के जितना ही दूध देने लगेगा परन्तु ध्यान रहे कि उस उल्लू को मारने के पहले उसे हाथ से पकड़ कर उस पशु के थनों के चारों और तीन बार अवश्य घुमा लें ।

15-उल्लू के आमाशय द्वारा पशुओं के दूध बढ़ाने का

विधि-सोमवार को चाँदनी रात में एक उल्लू पकड़ लावें और उसे चौदह दिन तक अपने यहाँ दाना पानी साधारण रीति से दे परन्तु नित्य सुबह शाम दही खाँड और दो तोला तिल का तेल मिलाकर अवश्य खिलाया करें । पन्द्रहवे दिन उसे सुबह खिला पिलाकर थोड़ी देर बाद मार डाले उसका पेट चीर कर उसके आमाशय को निकाल लें और गरम पानी में नमक मिलाकर आधा घन्टा तक भिगोये रखने के बाद साफ करले और साये में सुखाकर उसमें गाय का मक्खन लगावे और चांदी का टुकड़ा जा आधा माशा हो, उसी आमाशय में रख दें बाद में उस आमाशय के चारों ओर भी मक्खन लगा काले तिल चिपका दे जब आमाशय तिलों से भली भाँति ढक जावे तब उसके ऊपर नीला गेहूं का आटा लपेट और साये में सुखा ले सूखने पर इसके चारों ओर लाल

रंग का सूती कपड़ा लपेटकर एक गोला बनाकर लाल तागे से ही बाँध दे सब गोले को पशु जिस नाँद में चारा खाता हो उसके नीचे खोदकर गाढ़ दे और यदि पशुओं की संख्या अधिक हो तो इस गोले को सारी नाँदों के बीच में गाढ़ दे और पशुओं को समुचित बना खली भी दे आप विश्वास रखे कि इस प्रयोग से निश्चय ही उन पशुओं का दूध देना बढ़ जायेगा।

16-अच्छी नस्ल का पशु हो

विद्वानों का कथन है कि यदि पशुओं में गर्भाधान के समय अच्छी नस्ल का सांड होने के साथ यदि कोई उललू इन्हें सम्भोग करते देखे तो निश्चय ही पशु के नर बच्चा होगा जो कि बहुत ही सुन्दर और कार्य पटु होगा और यदि उन पशुओं में मैथुन में कोई मादा उललू देखे तो पशु से मादा बच्चा ही होगा । इसलिए उचित है कि पशुओं में गर्भाधान के समय इच्छानुसार नर या मादा उललू को पकड़ कर पिंजड़े में रखकर उन पशुओं के सामने रक्खे ।

17-पशुओं के कंधा या पीठ लगने की चिकित्सा

उपाय-जब किसी पशु की पीठ या कंधा लग जाये और जख्म हो जावे और अच्छा न होता हो तो उस उललू को पकड़ने का प्रयत्न करे जो उस पशु के जख्म को नोंचना हो उसे पकड़ कर उसके कुछ बाल व पंख नोंचकर छोड़ दे और उन पंखों को जलाकर उनको राख को उस पशु के जखम पर

बुरके बस वह घाव बहुत ही शीघ्र अच्छा हो जावेगा ।

18-घोड़े की चाल तेज हो

विधि-शवेरात के दिन दोपहर को एक युवा उल्लू जहाँ तक हो सके उसके घोंसले से पकड़ ले और घर पर पिंजड़े में रखकर उसे दाना पानी दे किन्तु रात को उसके पिंजड़े के भीतर एक लाल कपड़ा बिछा दिया करे और पानी के लिये एक प्याले में एक छटाँक गुलाब जल दे दूसरे दिन सुबह किसी बन्द कमरे में गूलर की लकड़ी के कोयलों पर गूगल हरमल और लाल चन्दन इतना सुलगावे जिससे कि धुंए से कमरा भर जावे फिर उललू के पिंजड़े को उसी कमरे में रख दे और पिंजड़े में उललू के खाने के लिए दो तोला शहद में एक छटाँक दही मिलाकर रख दे । दोपहर को उसे उबले हुए चावलों में खाँड मिलाकर उसके पिंजडे में रखकर उस पिंजडे को घर के बाहर किसी आम के पेड की डाल में बाँधकर लटका दे या पेड़ के नीचे रख दे । इसके बाद उसी दिन की रात में उस उल्लू को मार डाले और जितना भी रक्त हो सके निकाल कर साये में सुखाकर सुरमें की तरह बारीक पीसले बाद में इसी सुरमे में 3 माशा कस्तूरी और तीन ही माशा केशर मिलाकर खूब घोटे लाल शीशी में भरकर रखले बस इस सुरमे को घोड़े की आँखों में 40 दिन लगाकर कौतुक देखे । विशेष दौड़ के अवसरों पर उसे दौड़ने के आधा घन्टा पूर्व आँखों में लगावे और 1 रत्ती उसके पैरों के सुमों पर मल दें ।

19-उजड़ा बाग हरा हो

विधि-जिस वृक्ष पर उललू घोंसला बना लेता है चाहे वह एक ही क्यों न हो तो वह सृक्ष सूखने लगता है और फसलकम पड़ती जाती है यदि कहीं ऐसा हो तो उसे उचित है कि उल्लू के कुछ बाल व पंख लेकर वृक्ष में बाँध दे और क उल्लू को पकड़कर अपने यहाँलकड़ी के पिंजड़े में तीन दिन के लिए बन्द करे और उसे नित्य साधारण दाना पानी के अतिरिक्त सुबह तिली के तेल गें मिलाकर दही व चीनी खिलाये और शाम को दधि में चीनी व तिल का तेल मिलाकर पिलावे। चौथे दिन रात में जब चाँद पूरे तौर से आकाश में निकाल हो उस समय उसे उसी वृक्ष के नीचे ले जाकर इस प्रकार मार डाले जिससे कि उसके खून की कुछ बूंद वृक्ष के तले व जड़ों पर अवश्य गिरे और आप कुछ खून उस पेड़ की डाली व पत्तियों पर भी छिड़क दें और उसकी लाश को उसी पेड़ के नीचे जमीन में खोदकर गाढ़ दें और उसको दूसरे दिन से नियमित रूप से उस वृक्ष को सींचना शुरू करे। बस आप देखेंगे कि वह एक वृक्ष दिन पर दिन हरा होता जायेगा।

20-खट्टे आमों का मीठे आमों में बदल जाना

विधि-वैशाख की पड़वा को दोपहर के समय किसी उललू को पकड़कर मार डाले और उसके बाल व पंख नोंच

कर उसके जिसमें कि मलामत को साफ कर डाले और उसे किसी मिट्टी के मटके में डालकर ऊपर से पानी भर दे और उसमें एक सेर अंगूर डाल दे यदि अंगूर न मिले तो आधा सेर किसमिस डाल दें और उसके मुंह लपेटकर मिट्टी स बन्द कर दे। बाद में उस मटके की कम से कम 1 गज की गहराई में जमीन में गाढ़ दे और फिर इस मटके को नौ मास के बाद खोले और फिर आम के वृक्ष में वौर आने के समय के 15-20 दिन पहले से ही उस पेड़ की जड़ में एक सेर इसी मटके का पानी अवश्य डाले। आपको देखकर आश्चर्य होगा कि इस बार उस वृक्ष से पहले की अपेक्षा फल अत्यधिक लगेंगे और वह खट्टे के बजाय मीठे होंगे।

21-फसल की रक्षा का उपाय

विधि-यदि किसी खेत या बाग में पक्षियों द्वारा अधिक हानि होती हो तो आप उस खेत या बाग के बीच में जहाँ पर सब पक्षियों की निगाह आसानी से पड़ सके वहां एक कौआ या उल्लू मार कर बांध कर लटका दें। बस दूसरे पक्षी भय से आना कम कर देंगे।

चतुर्थ खण्ड

1-उपदंश की चिकित्सा

लक्षण-इसे लोग आतशिक कहते हैं। इसमें रोगी के जननेन्द्रिय पर जखम हो जाते हैं जिससे रोगी बहुत ही व्यथित

व पीड़ित हो जाता है ।

उपचार-किसी भी हृष्ट पुष्ट कौवे का एक तोले रक्त लेकर उसमें अपना रक्त मिलाकर साये में सुखाकर खरल में सुरमें की भांति बारीक पीस ले और शीशी में रख ले उसकी एक तिनका बुकनी गाय के मक्खन के साथ रोगी को खिलाये और वही बुकनी जखमों पर भी बुरक दें । इस प्रकार एक सप्ताह सेवन कर ले फिर एक मास के बाद एक सप्ताह उसके एक मास बाद फिर 1 सप्ताह तक सेवन करने से वह रोग सदैव के लिये समूल नष्ट हो जायेगा वैसे लाभ तो एक खुराक में ही दीखेगा और रोगी एक सप्ताह में ही ठीक हो जायेगा ।

2-नकसीर की चिकित्सा

लक्षण-इस रोग से रोगी की नाक से यकायक खून टपकने लगता है कभी-2 तो काफी मात्रा में गिरता है जिससे रोगी बहुत ही कमजोर हो जाता है ।

उपचार-इस रोग के उपचार के लिए किसी कौवे को पकड़ कर अपने यहाँ पिंजड़े में बन्द करे और 15 दिन तक साधारण दाना पानी दे परन्तु पीने के लिए जो पानी दें उसे देने के 12 घन्टे पहले सुपारी को सफेद मिंगी व मखानें के बीज काटकर भिगो दे बाद को वही पानी ही पीने को दे । सोलहवे दिन कौवे को मारकर उसका सारा खून किसी शीशी या चीनी के बर्तन में रखकर सुखा. . ने और खरल में डालकर

बारीक पीस ले प्रयोग के समय इस बुकनी का चौगुना सुरमा मिलाकर रोगी को नाश दे और उसी चूर्ण को अर्क वेदमुश्क में पीसकर माथे पर लेप करे इससे तुरन्त ही रोगी ठीक हो जायेगा परन्तु इस रोग को समूल नष्ट करने के लिये 15 दिन तक लगातार इस्तेमाल करना चाहिये ।

3-बालों के न उगने का उपाय

विधि-किसी कौवे को बस्ती से बहुत दूर के जंगल से पकड़े जिसके लिए विश्वास हो कि उसने कभी कोई आग पर पकाई हुई वस्तु न खाई होगी उसे पकड़ कर घर आवे और तीन दिन तक खाने में कोई फल और पीने के लिए केवल सनतरे का रस दें चौथे दिन उसे मारकर उसका सारा रक्त किसी चीनी के बर्तन में रखें और उसकी दुम के नीचे कुछ सफेद रोयें भी 6 माशा के करीब नोंचले और दोनों को खरल में डालकर खूब घोटे जब भली भांति घुट जावे तब उसमें 5 तोला चमेली का तेल मिलाकर पुनः घोटे । बस जिस स्थान के बाल न उगने देना अभीष्ट हो वहाँ के बाल उस्तरे से साफ करके इस लेप को खूब रगड़े इसी क्रम से 8 दिन रगड़ने के बाद पुनः उस स्थान के बाल बनाकर लेप करना शुरु करे इसी क्रम से 5-7 बार करने पर ही उस स्थान पर बाल का उगना प्रत्येक बार में कम होता जायेगा और अन्त में फिर उस स्थान पर कभी भी बाल न उगेंगे और वहां की जिल्द बहुत ही चिकनी स्वच्छ और आकर्षक हो जायेगी

परन्तु पुरुष उसका प्रयोग दांड़ी मूंछों पर न करें बाल उगने का उपाय आगे देखें ।

4-कण्ठमाला की चिकित्सा

लक्षण-इनमें रोगी के गले में बतौडी सी हो जाती है । जो दिन पर दिन बढ़ती जाती है । जिससे मनुष्य कुरुप और परेशान हो जाता है ।

उपचार-किसी कौवे को मारकर उसका एक तोला रक्त निकाल ले और उसी में कौए की हड्डियों की राख 3 माशा और कौवे के सफेद बालों की राख तीन माशा या जितनी मिल सके और तीनों वस्तुओं को मिलाकर पाव भर तिल के कूटे हुए अर्क में डाल कर खूब घोटे और रोरी की एक रत्ती चूर्ण में आधा रत्ती अभ्रक भस्म मिलाकर नित्य गाय के मक्खन के साथ दें । और उस स्थान पर करने के लिए बिना पत्तियों की अंगूर की 9 तोला बेल की राख में कौवे का रक्त और पीली सरसों का शुद्ध तेल मिलाकर बनाकर रख लें और लेप करने को दें । ईश्वर चाहेगा तो रोगी की इस रोग से शीघ्र ही मुक्ति मिल जायेगी । परन्तु ध्यान रहे कि यह दवा एक साल से अधिक नहीं रखी जा सकती ।

5-फुलबहरी की चिकित्सा

लक्षण-यह एक प्रकार से चर्म रोग है इसमें रोगी के किसी शरीर के भाग में सफेद-सफेद चकते पड़ जाते हैं जिससे वह बड़ा ही कुरूप नजर आता है ।

उपचार-किसी कौवे को मारकर उसका सारा रक्त निकाल कर किसी चीनी या शीशे के बर्तन में सुखाकर 21 दिन तक पीसे तदुपरान्त उस चूर्ण को रत्ती बैंगन के रस के साथ रात में सोने के समय दे और उसी कौवे की निकाली हुई कलेजी को आधा सेर तेल में खूब घोंटकर आग पर गरम करे जब वह कलेजी की लुगदी जल कर लाल हो जाय और बर्तन के पैंदे में बैठ जाय तब उस तेल को कपड़े में छानकर उसमें 2 तोला सूखे आँवले का चूर्ण और 3 तोले बावची का चूर्ण डालकर घोंटकर मरहम सा बनाले और इस तेल को नित्य उन सफेद धब्बों पर 15-20 मिनट तक मालिश करने कोकहे । 3 मास के अन्दर ही धब्बे ऐसे दूर हो जायेंगे जैसे गधे पर से सींग ।

6-हिस्टीरिया की चिकित्सा

लक्षण-यह वातोन्माद का रोग है इसकी शिकार प्रायः स्त्रियाँ होती हैं । इसमें रोगी एकाएक मूर्च्छित हो जाता है । और उसी उन्मादावस्था में रोता गाता या चिल्लाता है पुट्ठियाँ बन्द हो जाती हैं कभी-कभी दांत भी बन्द हो जाते हैं देहात में लोग इसे दौरा या बाँधा कहने लगते हैं ।

उपचार-किसी बड़े पहाड़ी कौवे को मारकर उसका भेजा निकाल ले और उसी में उस कौवे का एक तोला रक्त मिला कर दोनों का खूब खरल करे दूसरी ओर उसी कौवे के नाखून को लेकर बिना धुंआ की आग पर जलाकर उसकी

राख बनाकूर्ण रख ले और रोगी नाभि के चार अंगुल चारों ओर में एक तिनका राख मिलाकर पानी में घोलकर गाढ़ा लेप करें और उस राख में से एक तिनका भर राख उस रोगी को नित्य गाय के मक्खन के साथ एक सप्ताह तक खिलावे और इस ले केकेवल तीन दिन ही एक निश्चित समय पर नित्य एक बार लगााया करे । आप विश्वास रखे कि उसे यह रोग फिर कभी न होगा ।

7-प्रसव का कष्ट दूर करने के उपाय

लक्षण-बहुत सी स्त्रियों के बच्चा पैदा होने के समय बड़ा कष्ट होता है और इस कठिनाई में बहुत सी मूर्छित हो जाती हैं और बहुतों की जान तक चली जाती है बच्चा किसी प्रकार से बाहर नहीं निकलता है ।

चिकित्सा-किसी कौवे का अण्डा और ताजा खून को अण्डे की जरदी में मिलाकर प्रसूता स्त्री के तलवों पर लेप करें और कौवे के तीन बूंद खून में 6 माशा झाखदार एक तोला गनरी बूटी और एक तोला सूखा जंगली पोदीना का क्वाथ (फाटा) बनाकर रोगी को पिलावे साथ कौवे की बांह को आग पर रखकर उसके धुंये को योनि में पहुंचावे बस कुछ ही क्षणों में बच्चा बाहर आ जायेगा परन्तु यदि बच्चा मरा हुआ पैदा हा तो उसके विषैले प्रभाव को नष्ट करने के लिए उसे काढ़ को एक सप्ताह तक नित्य पिलावे ।

8-वस्त्रों के हर प्रकार के दाग व धब्बे दूर करना

विधि-किसी कौवे के 5 बूंद रक्त व एक माशा नमक और 2 तोला पानी मिलाकर घोल पर रक्त ताजा ही होना चाहिए । फिर कौवे के पंखो का ब्रुश बनाकर जिस सूती ऊनी या रेशमी कपड़े पर धब्बे पड़े हो उस पर यह घोल हल्का 2 लगावे और कपड़े को धूप में सुखने को रख दें । जब कपड़ा सूख जाय तो देखे यदि किसी प्रकार का कोई निशान या धब्बा बच गया हो तो पुनः उसी प्रकार ब्रुश से लगाकर सुखावे इसी प्रकार तीन चार बार करने पर आप हर धब्बे कोकम होता पावेंगे और तीसरे चौथी बार के प्रयोग में तो यह धब्बा बिल्कुल साफ हो जायेगा ।

अद्वितीय अञ्जन

निम्नलिखित अञ्जन आँखों की ज्योति बढ़ाने व रतौधी व ऐनक के प्रयोग को कम करने के लिए अद्भुत शक्ति रखता है ।

विधि-कृष्ण पक्ष की किसी गुरुवार की रात को एक कौव पकड़े और घर लाकर किसी अंधेरे कमरे में ही बन्द करदे सुबह एक बार उबाल कर ठंडा किया हुआ दूध अन्य दाना पानी के साथ मिट्टी के बर्तन में तीन दिन तक पिलावे। चौथे दिन रविवार को आधी रात के समय उसके कुछ काले पंख नोंचकर उसे छोड़ दें दूसरे दिन इन्हें निकालकर छाये में

सुखावे तदुपरानत प्रति दो पंखों पर एक माशा फिटकरी सफेद और 6 काला सुरमा मिलाकर 1 पाव नीम के पानी के हिसाब से एक डेढ़ सप्ताह तक खूब घोटे जब सब पिसकर एक समान हो जावे तो इसे किसी शीशी में भरकर रखले और नित्य किसी जस्ते की सलाई या नीम के तिनके से आंखों पर लगाया करे । कुछ दिनों के ही प्रयोग से आपको आश्चर्यजनक लाभ होगा ।

॥ इति शुभम् ॥

हमारे आलौकिक प्रकाशन

श्रीमद् भागवत दृष्टान्त माला 3 भाग सम्पूर्ण भगवत भूषण पं. रघुवर दयाल द्वारा कृत भागवत से सेवाधित सैकड़ों हस्पक्त तीन भाग अलग 2 की कीमत मूल 3 भागों 260/- रुपया डाक खर्च 40/- तथा एक ही जिल्द में तीनों भागों का मूल्य 300/- रु. डाक खर्च 30/-

भागवत दृष्टान्त माता पं. जयदेव जी महाराज द्वारा कृत भागवत से सेवाधित सम्पूर्ण दृष्टान्तों की बड़ी पुस्तक मोटा अक्षर बढ़िया कागज मूल्य 250/- रुपये डाक खर्च 50/- रुपये।
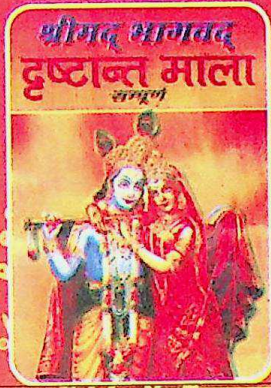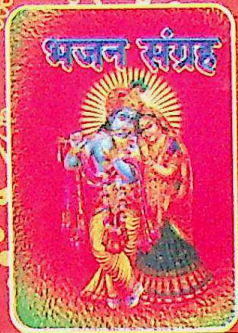
श्रीमद् भागवत भजन सरोवर ब्रज के रास की रहस्यों तथा भागवत आचार्यो द्वारा गाए आलौकिक भजनों की पुस्तक मजबूत जिल्द ऊपर प्लास्टिक कवर मूल्य 200/- रुपये डाक खर्च 50/-

भजन संग्रह भजनों की पुस्तक बढ़िया कागज मजबूत जिल्द प्लास्टिक आवरण मूल्य 150/- रुपये डाक खर्च 50/- हमारे यहाँ पं. श्रीकृष्ण शास्त्री ठाकुर जी वृन्दावन कृत भागवत कथा सार भी मिलती है। मूल्य 350/- रुपये डाक खर्च 50/-

हमारे यहाँ पं. श्री कृष्ण चन्द्र शास्त्री ठाकुर जी वृन्दावन द्वारा कृत भागवत कथा सार भी मिलती है। मूल्य 350/- रुपये डाक खर्च 50/- रुपये अलग।